वृन्दा

वर्ष 21, अंक-4, पत्रिका पंजीकरण संख्या MP HIN

अप्रैल : 2023

Red No M. P. HIN 2003/11939

मासिक
वृन्दा

सम्पादन परामर्श
श्री सुधेंदु ओझा-07701960982
सम्पादक
अंजना छलोत्रे
-84 61912125
कार्यकारी सम्पादक
आशा शैली- 7055336168
सम्पादकीय कार्यालय
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
मो-9827034165

मुद्रक/प्रकाशक/स्वत्वाधिकारी सम्पादक -अंजना 'सवि'
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
वृन्दा के सभी विवादों का वैधानिक क्षेत्र भोपाल रहेगा
लेखन सामग्री के लिए सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

मूल्य-एक प्रति 12/-,
वार्षिक 120/-,
संस्था और पुस्तकालय हेतु 120/- वार्षिक

इस अंक में

विधा	लेखक	पृष्ठ
सम्पादकीय		
चन्द्रशेखर आजाद	डॉ उमेश प्रताप वत्स	03
कहानी का लेखक	रमेश चन्द्र	05
सरस्वती वंदना, तिरंगा	-अंकुर सिंह	07
कुछ भी नया नहीं है	-अभिषेक जैन	08
करुण कहानी	-गौरीशंकर वैश्य विनम्र	08
सपनों को दीजिए	- प्रत्यूष शर्मा	09
चार ग़ज़लें	-डॉ पलिन (कोटा)	11
कहानियाँ-		
ना, तुम रो नहीं सकते	-गिरिमा घारेखान	
	अनुवादक: रजनीकान्त एस.शाह	12
बदनुमा दाग	-सन्दीप तोमर	15
धरावाहिक उपन्यासः-		
पारस	-आशा शैली	20
लेख		
हिन्दी भाषा और विराम चिह्न	- डॉ. विजय कुमार सिंघल	23
लघुकथा		
ये कैसा सिला...?	अमृता पाण्डे	24
सौदा	-नज़्म सुभाष	25
कहानी:- छुट्टी का एक दिन	-राम नगीना मौर्ण	26
शब्दचित्र		
मुझे तुम नजर से...	संध्या तिवारी	30
हिमालय स्थान बदल रहा है: ज्योतिषीय विश्लेषण	-ज्योतिष आचार्या रेखा कल्पदेव	31

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, तथा स्वत्वाधिकारी सम्पादक अंजना द्वारा वृन्दा के लिए खो प्रिंटर्स तलैया चौक से मुद्रित व जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल 462 039 से प्रकाशित।

नये वर्ष में नई उमंगें

देखते ही देखते 2022 भी बीत गया और हमने 2023 में प्रवेश किया। इसके साथ ही आपकी वृन्दा बीसवें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। समय को तो बीतना ही है, आप चाहें या न चाहें। बस हम केवल बीते दुखद को भुलाकर आने वाले समय में सब के कुशल-क्षेम की कामना करते हैं और उस परमशक्ति से इस उद्देश्य की याचना भी करते हैं, यह सुखद है। यही होना भी चाहिए, बीते दुखद को भुला देना ही श्रेयस्कर होता है। इसी कामना के साथ सभी मित्रों-पाठकों को नव वर्ष की बधाई के साथ वृन्दा के नया अंक प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

वृन्दा एक पावन और पवित्र नाम है। फिर चाहे उसे महान वानस्पतिक औषधि के रूप में लें या एक पौराणिक नाम के बतौर देखें, दोनों भारत के लिए पूज्य हैं। हम साहित्य को भी उसी पूज्य श्रेणी में रखकर देखते हैं। जिस प्रकार वृन्दा अर्थात् तुलसी औषधि के रूप में मानव को स्वास्थ्य लभ देती है, हमारा प्रयास है कि इस वृन्दा के सेवन से हमारे पाठकों का मानसिक स्वास्थ्य सुदृढ़ हो।

प्रगति के इस दौर में साहित्य कागज़ से होकर वेवसाइट पर आ गया है, न केवल आ गया है अपितु पढ़ा भी खूब जा रहा है यह हमारे लिए सुखद है। इस अंक के साथ ही हमारी पत्रिका वृन्दा भी अपने लघु कलेवर के साथ वेवसाइट पर आपको दिखाई देगी। हमारा प्रयास रहेगा कि इस मासिक लघु पत्रिका में साहित्य से इतर सामग्री न जाए।

इसी के साथ हम आपके सामने उपस्थित हैं एक नया अंक लेकर एक नयी सोच के साथ।

-आशा शैली

चन्द्रशेखर आजाद को अपना बॉस मानते थे सरदार भगत सिंह जी

- डॉ. उमेश प्रताप वत्स

देश की आजादी के लिए मात्र 23 वर्ष की आयु में अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव को भी भान नहीं होगा कि उनके बलिदान के बाद शहीदों के नाम पर इस प्रकार की राजनीति होगी। सर्वमान्य महापुरुषों एवं क्रांतिकारियों पर इस प्रकार एक संगठन की मोहर लगाने का प्रयास किया जाता है कि जिनको सारे देश के एक आवाज में मानना चाहिए, उनके दायरे को सीमित कर दिया गया है ताकि राजनीति चलती रहे। 23 मार्च शहीदी दिवस के निकट आते ही देशभर में भगत सिंह की विचारधारा का मुद्दा हर वर्ष की भांति आज भी कई संगठनों के सिर चढ़कर बोल रहा है।

काकोरी कांड के बाद एक साथ अपने दल के प्रमुख साथियों के पकड़े जाने से, आम लोगों व तत्कालीन नेताओं द्वारा सहयोग न मिलने से भगतसिंह व्यथित अवश्य हुये थे किन्तु पं. चन्द्रशेखर जी के सानिध्य व दुर्गा भाभी की प्रेरणा ने उनको ओर अधिक दृढ़ता से क्रांति गतिविधियों को चलाने हेतु तैयार किया। तत्कालीन भारतीय नेताओं द्वारा क्रांतिकारियों का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से विरोध जताने के कारण तथा स्वतंत्रता को लेकर अंग्रेजी हकूमत द्वारा क्रांतिकारियों को अनदेखा कर नरमपंथी नेताओं को बढ़ावा देने के कारण ही पं. चन्द्रशेखर आजाद ने अंग्रेजों की नींद उड़ाने के लिए असैंबली में विस्फोट करने की योजना बनाई, जिसे पंडित जी स्वयं पूरा करना चाहते थे। यद्यपि पंडित जी कुशाग्र बुद्धि के स्वामी, संस्कृत के विद्वान एवं बहुत ही तीव्रता से निर्णय लेने के लिए जाने जाते थे किंतु आंग्ल भाषा पर हाथ कमजोर होने के कारण बटुकेश्वर दत्त एवं सुखदेव के कहने पर यह दायित्व सरदार भगतसिंह व बटुकेश्वर दत्त को दिया। भगत सिंह ने विस्फोट के बाद गिरफ्तारी देकर व असैंबली में पर्चे फेंककर हिंदुस्थान के नवयुवकों को संगठन का जो संदेश देना था उसमें वे सफल रहे किंतु असैंबली में बहरों को अपनी आवाज सुनाने के लिए विस्फोट करने के बाद गिरफ्तारी देने तथा वहाँ सांडर्स हत्या के मुकदमे के दौरान अपने ही साथी द्वारा गवाही देने से वे बहुत दुखी हुये तब उन्हें अंग्रेजों के अत्याचार के कारण जनता के दुख, गरीबी, भूखमरी, अन्याय आदि परिस्थितियाँ व्यथित करने लगीं जो हर सच्चे देशभक्त को करती ही हैं। ऐसे में उन्हें लगा कि इतना सब कुछ होने पर भगवान कुछ नहीं कर रहा है। अल्प काल के लिए यदि भगत सिंह ने स्वयं को नास्तिक मान भी लिया तो इसका यह अर्थ तो कदापि नहीं हो सकता कि वे नास्तिक थे। जिन्होंने दशम गुरुओं के बलिदान से, आर्यसमाजी परिवेश में तथा माता के दूध में ही देशभक्ति का संस्कार पाया हो वह चंद पृष्ठों की एक पुस्तक लिखने मात्र से नास्तिक कैसे हो सकता है। दूसरा मार्क्स के ये अनुयायी कहते हैं कि फांसी से पहले उन्होंने लेनिन की पुस्तक पढ़ी थी, जो कि उनके आदर्श थे। बिल्कुल निराधार तथ्यहीन बात है। क्योंकि उन्होंने उस दिन जेलर से गीता, सत्यार्थप्रकाश एवं लेनिन की पुस्तक की मांग की थी, दुर्भाग्य से जेलर केवल लेनिन की पुस्तक ही उपलब्ध करवा पाया।

आर्य समाज और स्वामी दयानंद की विचारधारा

से गहन रूप से संस्कारित और प्रेरित भगत सिंह का नाम समस्त भारत में सशस्त्र क्रांतियों की प्रवृतियों का प्रतीक बन गया था। भारत की जंग-ए आजादी के दौर में भगत सिंह एक ऐसी अद्‌भुत शख्सियत रहे कि जिसने परंपरागत क्रांतिकारी विचारधारा में आधुनिक समाजवादी सिद्धांतों के समावेश का आग़ाज किया। वे प्रखर राष्ट्रवादी, देशभक्त एवं पक्के आर्यसमाजी थे। आर्यसमाज में भी स्वामी अग्निवेश जैसे मार्क्सवादी विचारों के लोग जनता को भगत सिंह के साम्यवादी होने का भ्रम फैलाते रहे। अपना उल्लू सीधा करने के लिए महापुरुषों का उपयोग बहुत ही घृणित कार्य है। एक आर्यसमाजी, देशभक्त और राष्ट्रवादी होना किसी भी प्रकार से साम्यवादियों की विचारधारा से मेल नहीं खाता।

आज 'आदर्श नेता विहिन संगठनों' में भगत सिंह को अपने संगठन-विचारों से जुड़ा होने के बारे में बताने की होड़ लगी है। पहले तो वामपंथियों ने भगत सिंह को अपनी विचारधारा से जोड़ने के लिए न-केवल एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया अपितु ऐतिहासिक प्रमाणों से भी छेड़छाड़ की और बहुत से बयानों एवं लेखों को भगत सिंह के नाम से प्रकाशित करवाकर जो लगातार पिछले सौ वर्षों से साम्यवादी होने का दावा किया जा रहा है, यह साम्यवादियों की दरकती नींव एवं नेतृत्व विहिनता का सबसे बड़ा उदाहरण है। इसी रुख को अपनाती हुई आम आदमी पार्टी युवाओं को पीली पगड़ी पहनाकर तथा सभी मंचों पर भगत सिंह के चित्र लगाकर यह दिखाने का प्रयास कर रही है कि पंजाब में हम इनके सबसे बड़े अनुयायी हैं जबकि भगतसिंह ने कभी पंजाब की बात नहीं की। वे पूरे हिन्दुस्थान की बात करते थे। उनके दल का नाम भी 'द हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी' था। पं. चन्द्रशेखर आजाद को ही वे अपना बॉस मानते थे तथा उनके मार्गदर्शन में ही देश को शीघ्र ही अंग्रेजी हकूमत से आजाद कराना चाहते थे। वास्तव में भगत सिंह जी का पूरा परिवार महर्षि दयानन्द जी को अपना आदर्श मानता था। वे आर्यसमाज के अनुयायी थे। सरदार भगतसिंह के बंगा गाँव में उनकी स्मृति में बने संग्रहालय में उनके जीवन से जुड़े तथ्यों को सहेज कर रखा गया है। भगत सिंह जी महाशय राजपाल जी की पुस्तक भक्ति-दर्पण को पढ़कर ही योग व संध्या करते थे। उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह जिस स्थान पर यज्ञ किया करते थे, वह हवन कुंड आज भी वहाँ रखा हुआ है।

सिख गुरुओं को मानने वाला, वैदिक रीति-नीति को मानने वाला आस्तिक परिवार नास्तिक कैसे हो सकता है। मार्क्सवादी लोग भगतसिंह की छोटी सी पुस्तक 'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' को बहुत प्रचारित व प्रसारित करते हैं। वे भगत सिंह के नाम का उपयोग कर देश के युवाओं को भ्रमित करके नास्तिकतावाद की ओर ले जाना चाहते हैं। वे भगतसिंह की प्रखर देशभक्ति को अनदेखा कर उनकी नास्तिकता का प्रचार करते हैं क्योंकि देशभक्ति तो उनको शूल की भांति कचोटती है। साम्यवादियों की दोगली मानसिकता का प्रदर्शन यहाँ भी दिखाई देता है कि भगतसिंह का कूका द्वारा गऊओं की रक्षा हेतु चलाये गये आंदोलन पर साहित्य तथा देश की स्वतंत्रता का उद्‌घोष वंदेमातरम के समर्थन में लिखा साहित्य नजरअंदाज कर केवल अपने एजेंडे में फिट होने वाले साहित्य का ही प्रचार किया जाता रहा है। अत: अब गलत इतिहास पढ़ाकर व तथ्य दिखाकर वर्षों से किया जा रहा यह षड्यंत्र बंद होना चाहिए और देश के सभी नागरिकों को भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु सहित सभी बलिदानियों के समक्ष नतमस्तक होकर श्रद्धा पुष्प अर्पित करने चाहिए।

यमुनानगर, हरियाणा
9416966424
umeshpvats@gmail-com

कहानी का लेखक -रमेश चन्द्र

भिखारी के-से वेश में वह व्यक्ति उस आलीशान कार्यालय के शाही भवन के बरामदों से गुजर रहा था। उस भवन की एक-एक वस्तु, एक-एक कलाकारी को वह इस प्रकार देख रहा था, जैसे उसने जीवन में वैसी वस्तुएँ कभी न देखी हों। उसके हाथ में सजे हुए कुछ बड़े-बड़े रजिस्टर ऐसे लग रहे थे, जैसे किसी करील में गुलाब लग गए हों। वहाँ के कर्मचारी उसे एक नजर से ठिठककर देख आगे बढ़ जाते। कुछ हैरान रह जाते कि यह भिखारी यहाँ कैसे आ गया। ये रजिस्टर इसने कार्यालय से तो नहीं चुराए हैं? उसे भी डर था कि कहीं कोई उसे कार्यालय से निकाल न दे। इसलिए वह कार्यालय के संपादक के नाम का पास हाथ में ही रखे हुए था। उसने उस पास को एक बार फिर देखकर ऊपर देखा तो सामने संपादक महोदय का कक्ष था। उसने डरते-डरते चोर की भाँति दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही संपादक के पीए ने उसे ऐसी झाड़ लगाई कि कंपकंपाहट के मारे उसके हाथ से पास ही गिर गया। उसने डरते-डरते पास उठाया और इससे पहले कि पीए उसे फिर कुछ कहता, कांपती आवाज में कहा 'सर, मुझे संपादक से मिलना है।' पीए ने उसे ऊपर से नीचे तक देखकर फिर डाँट मारकर कहा

''तू क्या करेगा संपादक से मिलकर?'' परंतु इससे पहले कि पीए उसे भगा देता, सामने बैठे पारखी और अनुभवी संपादक ने उसके हाथ में कुछ रजिस्टर देखकर उसे स्वयं ही बुला लिया। उसने हाथ जोड़कर संपादक को प्रणाम किया और खड़े-खड़े ही कहना शुरू किया,

''महोदय! मैं बरेली से आया हूँ। आपके कार्यालय के बाहर हिंदी पखवाड़े का बैनर देखा तो आपसे मिलने चला आया। मैंने हिंदी में बहुत कुछ लिखा है। यह देखो, देश की आजादी पर, यह शहीदों पर, यह देशभक्ति पर, यह राजभाषा हिंदी पर ...।'' ऐसा कहते हुए वह अपने रजिस्टरों के पन्ने उलटने लगा। संपादक उन्हें देखकर दंग रह गया। उसकी अत्यंत सुंदर लिखाई, अभिव्यक्ति और विषय-वस्तु को देखकर उसे लगा जैसे वह किसी पोटली में हीरे छिपाए घूम रहा हो। उस व्यक्ति ने अपनी बात जारी रखी,

''सर, मैंने कितने संपादकों को ये रचनाएँ दिखाईं, पर बिना जान-पहचान के कोई छापने को तैयार ही नहीं होता। आप ही देखिए, इनमें क्या कमी है?'

संपादक बड़े सहृदय व्यक्ति थे। उन्होंने उस व्यक्ति की बड़ी आव-भगत की तथा उसके लिए चाय और मिठाई मंगाई। उससे बड़े अपनेपन से बातें कीं। उस व्यक्ति का ऐसा सत्कार कहीं नहीं हुआ था। वह जैसे अपने सृजन-कर्म पर धन्य हुए जा रहा था। संपादक ने उसका दिवा-स्वप्न तोड़ते हुए कहा,

''आपकी यह कहानी हमारी पत्रिका के अगले अंक में आ जाएगी।'' यह सुनकर वह व्यक्ति अंतर्मन से इतना गदगद हुआ कि संपादक के पैर पड़ गया। वह उसकी सबसे अच्छी कहानी थी। वह अपार खुशी लेकर घर लौटा। मन ही मन सोचता जा रहा था ऐसे आदमी कहाँ मिलते हैं।

घर जाकर वह कहानी छपने की सूचना मिलने की प्रतीक्षा करने लगा, परंतु छह महीने तक कोई सूचना नहीं मिली। संपादक महोदय के पास पत्र डाला तो उसका भी कोई जवाब न मिला। अगले 14 सितंबर को वह फिर दिल्ली रवाना हुआ। सबसे पहले उन्हीं संपादक महोदय के कार्यालय पहुँचा। कार्यालय के बाहर उसने एक पत्रिका में कुछ लोगों को कुछ पढ़ते देखा तो कुतुहलवश वह स्वयं भी देखने लग गया। उसने देखा कि लोग उसी की कहानी पढ़ रहे हैं। उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह मन ही मन सोचने लगा, 'मैं जाकर पिता से कहूँगा, माँ से कहूँगा, भाई से कहूँगा, देखो मेरी कहानी कितनी बड़ी पत्रिका में छपी है, कितने लोग उसे पढ़ रहे थे। उस पत्रिका का संपादक बहुत अच्छा आदमी है। मैं स्वयं उससे मिला था।' जब वह इस खुशी से उबरा तो उसने चिल्लाकर लोगों से कहा,

''अरे! यह तो मेरी कहानी है! यह मेरी कहानी है! इसे मैं ही संपादक महोदय को देकर गया था। संपादक बहुत अच्छा आदमी है।' परंतु इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, एक व्यक्ति ने उसे वहीं रोक दिया और कहा,

''यह तेरी कहानी है? पागल कहीं का! तू ऐसी कहानी लिख सकता है? तेरा कहानियों से क्या नाता? यह संपादक महोदय की कहानी है! मालूम है इस कहानी के लिए उन्हें अभी-अभी दस हजार रुपये का पुरस्कार मिला है?''

उस व्यक्ति ने मानो किसी सदमे से उबरकर कहानी के लेखक का नाम पढ़ा। संपादक महोदय का नाम था। वह निढ़ाल पैरों से वहीं से वापस हो लिया।

46/22, लाल कोठी, गली नं. 12, गांधी नगर, पिक इंडिया फैक्ट्री के पीछे,
पटौदी रोड, गुरुग्राम, हरियाणा -122001, भारत
मोबाइल : +91 9711011034,
-मेल sambherwal@yahoo-co-in

डॉ.दिनेश पाठक 'शशि' को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ ने वर्ष-2021 का सर्वोच्च ''बाल साहित्य भारती पुरस्कार'' घोषित

राष्ट्रवादी विचारधारा से ओतप्रोत, गत 46 वर्ष से हिन्दी साहित्य के सृजनधर्मी डॉ.दिनेश पाठक 'शशि' को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ ने वर्ष-2021 का सर्वोच्च बाल साहित्य पुरस्कार ''बाल साहित्य भारती पुरस्कार'' (राशि अढाई लाख रुपये) उनके सम्पूर्ण बाल साहित्य लेखन के लिए प्रदान करने की घोषणा की है।

डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' की अब तक 39 पुस्तकें मूल तथा 14 पुस्तकें उनके द्वारा सम्पादित, कुल तिरेपन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। साथ ही इन्होंने हिन्दी साहित्य की 11 पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया है। इनकी 25 पुस्तकें एमेजान एवं फिलपकार्ट पर भी पढ़ी जा सकती हैं। इनके साहित्य पर एक शोध कार्य हो चुका है तथा इनके बालसाहित्य पर अन्य 2 शोध कार्य हो रहे हैं। इनकी 3 बाल कहानियाँ कक्षा 1, 4 एवं 6 के हिन्दी पाठ्यक्रम में शामिल की जा चुकी हैं। ये गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा सलाहकार समिति के लिए 5 वर्ष हेतु चयनित सदस्य हैं।

डॉ. पाठक की बालकहानी 'भूल' पर शॉर्ट फिल्म का निर्माण हो चुका है। इन्हें भारत सरकार के प्रेमचंद पुरस्कार, भारत सरकार के लालबहादुरशास्त्री पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का अमृतलाल नागर बाल कथा सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का श्रीधर पाठक नामित पुरस्कार, नागरी प्रचारणी सभा आगरा का पुरस्कार, बाल पुस्तक न्यास दिल्ली सहित अब तक तीन दर्जन से अधिक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जा चुका है।

इनकी हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में लिखी गई सहस्राधिक रचनाएँ सन् 1975 से देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा सन् 1980 से आकाशवाणी-दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों से प्रसारित हो रही हैं। पत्रिका परिवार की ओर से डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' को हार्दिक बधाई।

सरस्वती वंदना

हे विद्यादायिनी! हे हंसवाहिनी,
करो अपनी कृपा अपरम्पार।
हे ज्ञानदायिनी, हे वीणावादिनी,
बुद्धि दे, करो भवसागर से पार।।

हे कमलवसिनी, हे ज्योतिरूपे।
तम हर, ज्योति भर दे।
हे वसुधा, हे विद्यारूपा,
वीणा बजा, ज्ञान प्रबल कर दे।।

हे वाग्देवी, हे शारदे,
हम सब हैं, तेरे साधक।
हे भारती, हे भुवनेश्वरी,
रहे नहीं कोई अब बाधक।।

हे कौमुदी, हे चंद्रकान्ति,
हम बुद्धि ज्ञान तुझसे पाए।
हे जगती, हे बुद्धिदात्री,
जीवन तुझमें रम जाए।।

हे सरस्वती, हे वरदायिनी,
तेरे हाथों में वीणा खूब बाजे।
हे श्वेतानन हे पद्मलोचना,
तेरी भक्ति से मेरा जीवन साजे।।

हे ब्रह्म जाया, हे सुवासिनी।
कर में तेरे ग्रंथ विराजत।
हे विद्या देवी, हे ज्ञान रूपिणी,
ज्ञान दे करो हमारी हिफ़ाजत।।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ. प्र. -222129
मो. 8367782654.
- 8792257267.

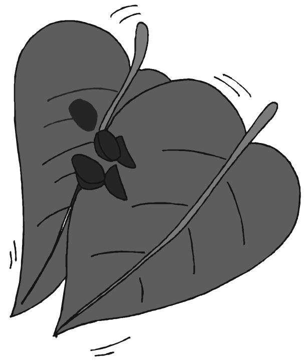

तिरंगा

तिरंगा है हमारी जान,
कहलाता देश की शान।
तीन रंगों से बना तिरंगा,
बढ़ता हम सब की मान।।

केसरिया रंग साहस देता,
श्वेत रंग शांति दिखलाता।
हरा रंग विकास को बता,
तिरंगा बहुत कुछ बताता।।

तिरंगे मध्य में अशोक चक्र ,
निरंतर हमें बढ़ने को कहता।
राजपथ और लाल किले पर,
तिरंगा देश की शान बढ़ाता।।

तिरंगा है देश की पहचान,
रखेंगे हम सब इसका मान।
तिरंगे की रक्षा के ख़ातिर,
कर देंगे अपने प्राण कुर्बान।।

आओ आज हमसब मिलकर,
जन गण मन राष्ट्र गान गाएँ।।
जाति-धर्म का भेद मिटाकर,
अपने देश का हम मान बढ़ाएँ।।

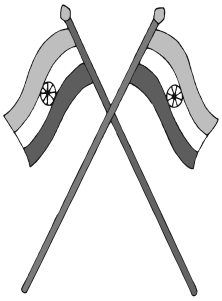

कुछ भी नया नहीं है

-अभिषेक जैन

नये साल में।
हम खुशियाँ मना
रहें हैं वहीं
पुराने हाल में।

जो भी बीत गया है
उसे भूल जाना तुम
यहीं संदेश देते हैं हम
नये साल में।
सूरज की किरणें
भी वहीं पुरानी सी
लग रहीं हैं।
लेकिन
हमारे
दिल को सुहानी
सी लग रहीं।

जो बीत गया है।
वो बीती बातें अब
किस्से
की कोई
हमको कहानी सी
लग रही।

-संजय चौराहा, विद्यासागर रेडियो हाऊस,
पथरिया-470666 दमोह, (मध्यप्रदेश)

करुण कहानी

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

बड़ी मधुर स्वरलहरी होगी।
हृदय वेदना गहरी होगी।

पथिक खोजता शीतल छाया
गमह्व की दोपहरी होगी।

पानी लायी नहल्ठ घाट तक
नदी कहल्ठ पर ठहरी होगी।

नाम अधर पर आ जाते ही
सुस्मृति पुनः सुनहरी होगी।

सच्ची करुण कहानी सुनकर
ओढ़े मौन कचेहरी होगी।

भाषणबाजों के शासन में
जनता गूँगी-बहरी होगी।

काले मेघों से लगता है
घटा और भी घहरी होगी।

मिली सलाह, रहो भूखे यदि
काया बहुत छरहरी होगी।

-117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष 09956087585

सपनों को दीजिए न दिशा -नया साल, न उम्मीदें, नये अवसर

- प्रत्यूष शर्मा

नव वर्ष 2023 आ गया है। खुशी और उत्साह के साथ नए साल का लोग स्वागत करते हैं। नया साल हम सभी के लिए बेहद खास होता है। इस मौके पर हम पिछली तमाम परेशानियों, दुखों और असफलताओं को भूलकर एक नयी शुरुआत करते हैं।

लोगों को ऐसा विश्वास होता है कि नया साल उनके जीवन में बदलाव लाएगा। नया साल खुशियाँ, उन्नति लेकर आएगा, लेकिन कैलेंडर बदलने या तारीख बदलने से जीवन में खुशियाँ और कामयाबी नहीं मिलती। अपने लक्ष्य को पाने के लिए आपको दृढ़ संकल्प करना पड़ता है। हर कदम पर उस संकल्प को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित होते रहना पड़ता है। लोग नए साल पर कुछ संकल्प लेते हैं। ये आपको संकल्प नए-नए लक्ष्यों को पाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

वैसे तो जीवन में हर दिन महत्वपूर्ण होता है लेकिन फिर भी हमारा मन किसी ना किसी शुरुआती बिंदु या समय की तलाश करता है, जहाँ से हम कुछ नए काम की शुरुआत कर सकें। हर आदमी अपने जीवन मे कुछ न कुछ बदलाव तो लाना ही चाहता है, लेकिन कभी आलसीपन, कभी प्रेरणा की कमी, तो कभी संसाधनों का अभाव, ये सब मिलकर हमें आगे बढ़ने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने से रोकते हैं। कई बार हमें अपने प्रयासों पर भी संदेह होने लगता है कि हम जो कर रहे है, वह सही है भी या नहीं, सही दिशा में है भी या नहीं। हम जो भी प्रयास और मेहनत आज कर रहे हैं, उनका त्वरित परिणाम मिल जाए यह जरूरी नहीं हैं। आपको कई बार ऐसा लग सकता है कि आपका ही जीवन इतनी उलझनों से भरा क्यों है? जब भी ऐसा लगे तो कभी हिमा दास, कभी नवाजुद्दीन सिद्दीकी, कभी सुपर-30 वाले आनंद कुमार की कहानियाँ पढ़ लीजिए और आपको तुरंत ऐसा एहसास होगा कि आपकी जिंदगी कई लोगों से बेहतर स्थिति में है।

जब भी कहीं से भी हमें कुछ अच्छा और बड़ा करने की प्रेरणा मिलती है, हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, ये ऊर्जा हमारे नकारात्मक विचारों को दूर कर हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने की और हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने की शक्ति देती है। इस शक्ति को बनाए रखने के लिए हमें अपने लक्ष्यों के प्रति संकल्पबद्ध होना चाहिए। हम यह कह सकते हैं कि संकल्प तो कभी भी लिए जा सकते हैं, लेकिन यदि साल के प्रथम सप्ताह मे शुरुआत हो जाए तो इससे बेहतर क्या बात होगी । आप आज जो हैं, वह इस बात को इंगित करता है कि पिछले कुछ वर्षों मे आपने क्या किया है, आप कल क्या होंगे, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि आज आप क्या संकल्प ले रहे हैं और उस संकल्प को पूरा करने के या अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए कितना समर्पित हैं।

यहाँ ध्यान देने योग्य एक और बात यह है कि लक्ष्य ऐसे होने चाहियें जो कि आपकी क्षमता से परे ना

हों। ऐसे अप्रयोगिक लक्ष्य ना बनाएँ जैसे कि ''मैं आज से हर दिन 18 घंटे पढ़ूँगा/ पढ़ूँगी, आज से दिन में केवल एक बार ही भोजन करूँगा/करुंगी, एक ही महीने में 20 किलो वजन कम करूँगा/करुंगी, आज से सारा सोशल मीडिया बन्द कर दूँगा इत्यादि। ऐसे लक्ष्य निर्धारण के दो नुक़सान हो सकते हैं। पहला यह कि इनको पूरी ऊर्जा के साथ निभाना थोड़ा मुश्किल है। दूसरा नुकसान यह हो सकता है कि यदि आप इनके प्रति समर्पित रह भी जाते हैं तो भी इसके साथ आपको कुछ ना कुछ शारीरिक/ मानसिक ज्यादती सहनी पड़ सकती है।

बेहतर होगा कि खुद के लक्ष्यों या संकल्पों को थोड़ा लचीला बनाएँ, जैसे कि ''मैं हर सप्ताह में कम से कम पाँच दिन, 8-10 घंटे पढ़ाई ज़रूर करूँगा/ करूँगी, सप्ताह में केवल एक दिन ही मिठाई/ मीठी चीज़ें खाऊँगा/ खाऊँगी, दिन में 30 मिनट से ज़्यादा सोशल मीडिया पर नहीं बिताऊँगा/ बिताऊँगी। ऐसा करने के दो फ़ायदे होंगे, पहला यह कि आप आसानी से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर पायेंगे और दूसरा फायदा यह होगा कि यदि किसी कारणवश आप अपने साप्ताहिक या दैनिक लक्ष्य से चूक गए तो आपको आत्मग्लानि नहीं होगी क्योंकि आपके पास एक विकल्प होगा और आने वाले दिनों में आप अपने लक्ष्य को पूर्ण कर लेंगे।

ऐसा करना इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यदि आप पहली ही बार में बहुत ही कठोर निर्णय ले लेते हैं और एक बार भी उसे पूर्ण ना कर पाए तो ज़्यादा सम्भावना यह ही बनती है कि आप उस सम्पूर्ण लक्ष्य के प्रति निरुत्साहित होकर उसे छोड़ देंगे।

नये वर्ष का प्रथम सप्ताह आपको यह सुनहरा अवसर देता है कि आप अपने जीवन को बेहतर बनाने के बारे मे गम्भीरता से सोचें और अपने जीवन के लक्ष्यों का मूल्यांकन करें। अगर आपको ऐसा लगता है कि अब लक्ष्य निर्धारण करने का समय निकल चुका है तो केवल आपको याद दिलाने के लिए मैं यह कहना चाहूँगा कि जब स्पाइन ट्युमर के जटिल ऑपरेशन होने के कई सालों बाद अपनी उम्र के पाँचवें दशक में दीपा मलिक अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत सकती है, कर्नल सैंडर 65 वर्ष की उम्र में के.एफ.सी. की स्थापना कर सकते हैं, तो आप भी तो बहुत कुछ कर सकते हैं।

अपने प्रयासों को नई दिशा दीजिए और अपने लक्ष्यों को नई ऊर्जा दीजिए। तो अब ज्यादा न सोचिये और नई ऊर्जा से, नई उमंग से, नई तरंग से, एक नई सफलता की कहानी लिखने को हो जाइए तैयार, क्योंकि नव वर्ष कर रहा है आपका बेसब्री से इंतज़ार।

नव वर्ष में हमें हमेशा सकारात्मक होना चाहिए और उस मुकाम को पाने के लिए हर प्रकार की कोशिश करनी चाहिए जो हमारा लक्ष्य है।

नये साल में हम पुराने साल की अपेक्षा कुछ नया और बेहतर करना चाहते हैं। नया साल नई उम्मीदें, नये अवसर, नई ख़ुशियाँ, नए रिश्ते बहुत सारी नई चीजें लेकर सभी के जीवन में आता है। अगर आपने अब तक नये साल पर कोई नया संकल्प नहीं लिया है तो इस बार अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए और सफ़लता प्राप्त करने के लिए कोई बेहतरीन संकल्प जरूर लें।

आने वाला नया साल हम सभी के लिए आशावान होगा। हम नये सपने बनेंगे या अपने सपने को इस साल पूरा करेंगे। नए साल का मतलब बहुत सारे नए सपने और नई उपलब्धियाँ हैं।

मेल- ankupratyush5@gmail-com
फोन- 7018829557
द्वारा विधि चंद शर्मा, गाँव - पलासन,
डाकघर- नाल्टी, तहसील और जिला-
हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश। पिन-177001

सहायक प्रबंधक , इंडियन ओवरसीज बैंक

डॉ. नलिन की चार ग़ज़लें

आधुनिकता का चलन रखना
पूर्वजों की भी कहन रखना

साँझ तक मन में सहेजे ही
भोर की शीतल तपन रखना

शून्य-सा रखना हृदय निशिदन
भावनाओं की छुवन रखना

हाथ जलते हैं, जलें लेकिन
कर्म में नित-नित हवन रखना

लौटकर परिवार में मन को
प्रेम में फिर-फिर मगन रखना

रास्ता अच्छा कठिन होता
पर कठिनता में गमन रखना

हो कभी मिलना नलिन से तो
मत मुखौटे को पहन रखना

दूर किया इक इक रोड़ा है
बंजर धरती को गोड़ा है

जिस रस्ते पर फूल बिछे थे
हमने वह रस्ता छोड़ा है

उसने तो सच ही दिखलाया
तुमने पर दर्पण तोड़ा है

सब कुछ पाकर सोच रहे हो
जितना पाया है थोड़ा है

सपने टूटे जाते फिर भी
सपनों से कब मुख मोड़ा है

खाकर मार झुका पर्वत भी
देखा किसने वह कोड़ा है

नीड़ 'नलिन' फिर बिखरा जाता
तिनका तिनका फिर जोड़ा है

आज खुलकर बोल लेने दो
बन्द खिड़की खोल लेने दो

एक लपजरे में रही मैना
पर उसे भी तोल लेने दो

थक गए अपनी सुरक्षा से
आँधियों में डोल लेने दो

प्यास की सीमा नहल्र अपनी
अब नदी इक घोल लेने दो

छोड़ दो ये पुस्तकें सारी
सीख कुछ अनमोल लेने दो

साथ लेकर चल पड़ो मिट्टी
सर्व सुविधा छोल लेने दो

रात दिन बीते नलिन यों ही
आज संकट मोल लेने दा

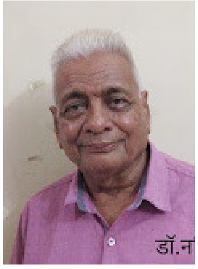

संक्षिप्त परिचय-डॉ. नलिन
जन्म - 18 जनवरी 1948
स्थान - कोटा , राजस्थान
शिक्षा - जवाहर लाल नेहरू आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, अजमेर से चिकित्सा स्नातक
प्रकाशन - चार ग़ज़ल संग्रह, एक गीत संग्रह और दो कुण्डलिया संग्रह
सम्मानोपाधियाँ -कई प्रतिष्ठित सम्मान एवं उपाधियाँ, सभी नि: शुल्क एवं अयाचित
सम्पर्क - 4 ई 6, तलवंडी, कोटा-324005, राजस्थान, मो. 9413987457

नित्य बढ़ती उलझने हैं
जड़ नहीं, कटते तने हैं

कुछ हरे पत्ते बचे अब
धूम्र के बादल घने हैं

आरियों के दन्त तीखे
हाथ लोहू में सने हैं

हैं कहाँ चिड़ियाँ फुदकती
बन्द सारे घर बने हैं

कौन सी ऋतु अब हँसाए
हो गये हम अनमने हैं

है नहीं मिट्टी कहीं भी
गाँव, पथ पत्थर बने हैं

हम बहुत बजते रहे जो
हम 'नलिन' थोथे चने हैं

ना, तुम रो नहीं सकते

लेखिका: गिरिमा घारेखान
अनुवादक: रजनीकान्त एस.शाह

लेखिका: गिरिमा घारेखान, 10, इशान बंगलोज, सुरधार-सत्ताधार रोड, थलतेज, अहमदाबाद -380054. मो. 8980205909. E-Mail -kruhagi@yahoo-com

संपर्क:

अनुवादक: 2, 'शीलप्रिय', विमलनगर सोसायटी, नवाबजार, करजण- 391240. जिला वडोदरा
मो. 9924567512.

सुबह नौ बजे तक तो सारा घर भर गया था। अभी नए आनेवाले लोगों का तांता तो जारी ही था। हर आनेवाला व्यक्ति गुलाब की पंखुरियों से भरी थाली लिए बगल में खड़ी ममता के पास जाकर थाली से थोड़ी पंखुरियाँ लेकर लता बहन की प्रदक्षिणा लेकर उनके चरणों में अर्पण कर देता था और चरण वंदन करके परे हट जाता था। उत्साही स्त्रियों ने लता बहन को नववधू की भांति सजाया था। कपाल पर बड़ा टीका, मांग में सिंदूर, लाल साड़ी और हाथ में लाल-हरी चूड़ियाँ।

मृत पत्नी के मुख को अपलक देख रहे सुमंतभाई सामने ही खड़े थे। रूम में कौन आ रहा है, कौन जा रहा है उससे वे नितांत बेखबर थे। एक तो आँखें अश्रुओं को पकड़े रखकर धुंधली पड़ गई थीं और फिर यादों की भीड़ ने मन पर ऐसा आक्रमण किया था कि दृष्टि के आगे आवरण छा गया था। उस आवरण के भीतर खेल रहे थे उनके लता संग जिये हुए वैवाहिक जीवन के चालीस वर्ष।

कैसा खुशबूभरा संसार था उनका? दर्पण में खुद देखे और जीवनसाथी का चेहरा नजर आए ऐसे समरूप हो गए थे दोनों। एक के मन में विचार आए और दूसरे की जीभ पर से वे विचार शब्द बनकर टपकते थे। मतभेद ही नहीं हो तो फिर मनभेद का सवाल ही कहाँ से पैदा होगा? लता ने आकर उनके सहरा जैसे जीवन को हराभरा कर दिया था। उसने कार्येषु मंत्री-वाली पत्नी के चारों फर्जों का अच्छे से निर्वाह किया था। तो उस तरफ उन्होंने भी लता की हर इच्छा को आदेश मानकर पूरा किया था। बेटी शादी करके ससुराल गई उसके बाद तो उनका समूचा विश्व एकदूसरे में ही समा गया। ऐसे मधुर दाम्पत्य का इस प्रकार अचानक ही अंत? रात को सोयी तब तक तो लता ठीक थी। दो घंटे बाद वह अचानक उठी, छाती में हल्का सा दर्द हो रहे होने की फरियाद की और डॉक्टर के आने से पहले ही अनंत यात्रा पर चल दी थी। जलविहीन आकाश से अचानक बिजली कौंधी थी और उसने सुमनभाई के संसार को भस्मीभूत कर दिया था।

ममता और जमाई रात में ही वहाँ पहुँचने के लिए निकल चुके थे। सारी रात पास-पड़ोस के लोग सुमन्तभाई के साथ बैठे रहे थे। जमीन पर लेटाई हुई लता को देख-देखकर उनकी आँखों से आँसू बाहर आने के लिए उधम मचा रहे थे। पर उनके आसपास रचित मृदु शब्दों की जंजीरों ने उन आँसुओं को पलकों के भीतर कैद कर लिया था। अंजना बहन ने कहा था, ''ना, सुमंतभाई, आप नहीं रो सकते। लता बहन की आत्मा अभी यहाँ ही है। वह आपको देख रही है। जीते जी उन्होंने एक भी दिन आपको कमजोर पड़ने नहीं दिया है। अब आपको रोते देखकर उनकी आत्मा को दुःख पहुँचेगा।''

अशोकभाई कंधा थपथपाकर कहते थे, ''आप मर्द हो भाई। आप ही ऐसे हिम्मत हार जाओगे तो ममता को कौन संभालेगा? उसने तो उसकी माँ को गंवाया है।''

सुमनभाई को कहने की इच्छा हुई थी, ''पर मैंने अपनी साँस को गंवाया है, उसका क्या?'' पर उन शब्दों को उन्होंने अवरुद्ध साँस के साथ अंदर ही पकड़े रखा था और जमे हुए आँसुओं जैसा चेहरा लिए रात बिता दी थी। ममता के आने पर उसे देखकर तो आँखों के आड़े रेती से बंधा बाँध टूटनेवाला तो था ही। बाहर ममता की गाड़ी के रुकने की आवाज आयी सुमंतभाई के अश्रु पलकों के झरोखे में जमा हो गए। सुरेशभाई की नजरें दरवाजे पर जमी हुई थीं कि दौड़कर तनिक आगे आये हुए जमाई ने उनको कान में कह दिया, ''ममता तो यह खबर जानकर पछाड़ खाकर गिरी थी। बी. पी. लो हो गया था। मुश्किल से गोलियाँ देकर उसे यहाँ तक लाया जा सके उतना स्वस्थ रखा। सारा रास्ता रो-रोकर उसने अपने आँसू भी कम कर दिये हैं। अब आप उसे देखकर पस्तहिम्मत नहीं हो जाना पप्पा! अन्यथा उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर होगा।''

पप्पा उनके गले लगकर रो रही बेटी की पीठ सहला रहे थे- अश्रुशून्य आँखों से। सुमंतभाई के बड़े भैया रूम में आए और प्रदक्षिणा की विधि सम्पन्न करके उनके पास जाकर खड़े हो गए। हृदय से नहीं निकल पानेवाली सिसकियाँ सुमंतभाई के अंग अंग से निकलीं और सारा शरीर कांपने लगा। भाई ने उनका हाथ पकड़कर सहानुभूतिपूर्वक दबाया। उन्हें याद आया, पप्पा का देहावसान जब हुआ था तब आठ और बारह वर्षीय ये दोनों भाई एकदूसरे से लिपटकर रोये जा रहे थे। आखिर में जब श्मशान यात्रा के लिए सबने मिलकर पप्पा को 'राम बोलो भाई राम' बोलकर उठाया तब तो उनके रुदन ने आक्रंदन का रूप ले लिया था। उस वक्त दूर के किसी मामा ने आकर उन लोगों से कहा था, लड़का होकर ऐसे चीख चीखकर कहीं रोया जाता है? इस तरह तो स्त्रियाँ रोती हैं! देख नहीं रहे तुम्हारी माँ की दशा? जाओ, उसके पास जाकर बैठो। अन्यथा उसे भी गंवा बैठोगे।'' मम्मी की दशा देखकर उन दोनों भाइयों ने अपनी छलकती जा रही मटकियों को ढक्कन से ढाँप दिया था और मम्मी का हाथ पकड़कर बैठ गए थे।

उसके बाद तो पप्पा रहित शैशव में ऐसे ढक्कन ढांपने के अनेक मौके आए थे, पर लता नामक फूलों से लदी लता उनके जीवनवृक्ष से लिपटी और तब से जीवन महक उठा था। कलियों जैसे दिन उगते और फूलों की भांति अस्त होते थे। एक दूजे के सान्निध्य में रात्री का अंधकार सुरभित हो जाता था।

सुमंतभाई का एक चचेरा भाई उनके पास आया, ''सुमंत! ममता भी श्मशान में आना चाहती है, अग्निदाह तो तुम....''

अग्निदाह! लता को? वह तो जरा सी भी जलन होने पर उसके गले से चीख निकल जाती थी। सुमंतभाई तुरंत उसकी उंगली पर मरहम मल देते थे। लता कहती थी, मैं किसी से डरती नहीं हूँ। पर

जल जाने का डर बहुत लगता है।'' उस लता के शरीर को आज जला देना है? सुमंतभाई की आँखें छलक उठीं।

''क्या सुमंत तुम भी! ममता श्मशान आने की बात करती है और तुम रोने के लिए बैठे हो? तुमसे तो वह लड़की बहादुर कहलाए।'' सुमंतभाई ने उनके सागर को बूंद में बांध दिया। बड़े भैया ने उनके कंधे पर हाथ रख दिया और बोले, इतने कमजोर तो तुम जब राहुल गया तब भी नहीं हुए थे। आज क्यों ऐसा कर रहा है? देख सुमंत, पहले दीवार ढहे या बाजू के मकान की दीवार (side wall), दो में से एक तो पहले ढहनेवाला ही है। यह जगत का नियम है।''

सुमंतभाई को घर के आँगन में खेल रहे राहुल के एक्सीडेंट की याद आ गई। उसका लहूलुहान शरीर देखकर खुद दिग्मूढ़ हो गए थे। रोने जितना भी होश कहाँ रह गया था? लता तो बेहोश ही हो गई थी। चार दिन बाद अस्पताल से छुट्टी देते वक्त डॉक्टर ने सुमंतभाई से सविशेष कहा था, आपकी पत्नी को गहरा आघात पहुँचा है। जहाँ तक हो सके उनको खुश रखने और इस घटना को भुलाने का प्रयत्न करना।'' उस समय तो सुमंतभाई ने ही अपने आप से कह दिया था। तुम रो नहीं सकते।' अपने दु:ख को अंतर के गहरे कुएँ में डालकर उन्होंने लता के लिए खुशियाँ उलीची थीं। ममता का जन्म हुआ उसके बाद सब ठीक हो गया था। हृदय के घाव को वक्त के मरहम ने भर दिया था।

चचेरा भाई कहने के लिए आया, ''वान आ गई है।'' शांत हो गया हुआ रूम कुलबुलाकर सक्रिय हुआ। अग्निदाह देते समय सुमंतभाई ने अच्छे से याद रखा था, उन्हें रोना नहीं था। ममता को लो बी.पी. नहीं होना चाहिए। उसकी तबीयत को संभालना है।

बीस दिन बाद जमाई ममता को लिवा ले जाने के लिए आए और दोनों ने सुमंतभाई को उनके साथ चलने के लिए बहुत आग्रह किया लेकिन वे नहीं माने, ना बेटा! ऐसे घर छोड़कर थोड़े ही चले जाया जाता है? अब तो सारी जिंदगी अकेले ही रहना है तो जितना जल्दी मेरी आदत बन जाए उतना अच्छा है। आप निश्चिंत होकर जाओ।''

ममता और सुनीलकुमार को लगा कि अब पप्पा स्वस्थ होने लगे हैं। आखिरकार तो वे पुरुष हैं।

वे लोग घर से बाहर निकले कि तुरंत एकांत लता की यादों से छलक गया। लता के साथ बिताए हुए चालीस वर्षों का हर क्षण जीवंत होकर सुमंतभाई के आजूबाजू चकराने लगा-उसकी बातें, उसका खुला हास्य, उसका सदैव बरसता प्रेम, उसकी प्रतिक्षण की दरकार, सब कुछ। उसके बिना कैसे जिया जाएगा? बाद में तो हृदय में अवरुद्ध रुदन सारी जंजीरें तोड़कर उफनने लगा।

'अभी तुम रो नहीं सकते' ऐसा कहनेवाला भी कोई नहीं था। सारा आकाश उनकी आँखों से बरसता रहा। गाल पर से दरिया धार बनकर बहता रहा। सुमंतभाई मानों किसी तंद्रा में चले गए।

यह कौन बोला? मन की एकलता में यह किसकी आवाज के खनकते कदमों ने आहट दी? उन्होंने लता के चित्र की ओर देखा। उसकी आवाज सीधे उनके हृदय को सुनाई देती थी,

''ऐसे कहीं कोई रोता होगा? मैं कहीं नहीं गई हूँ। घर में चारों ओर नजर डालो...सर्वत्र मैं ही हूँ-

इस सोफा पर, अंदर रसो घर में, बारामदे के झूले पर, उस तुलसी क्यारे के पास, जहाँ नजर डालो वहाँ, आपके साथ साथ। हृदय की धड़कनों को सुनो-उनमें मैं हूँ ना? आप हैं तब तक मैं हूँ ही। घर में हवा के रूप में रहनेवाली हूँ।''

खिड़की से आनेवाला पवन सुमंतभाई के अणुअणु को सहलाता रहा। वे हवा की भांति हल्के हो गए। आँसू पोंछकर उन्होंने अपने आप से कह दिया, ''लता तो तुम्हारे साथ ही है और तुम्हारी साँसें चलती रहेंगी तबतक रहनेवाली है। ना! तुम नहीं रो सकते।''

बदनुमा दाग-सन्दीप तोमर

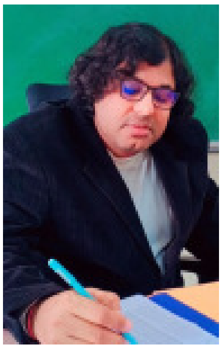

वह एक लाइब्रेरीनुमा कमरा था। मैंने कमरे को हैरत भरी निगाह से देखा। इतनी सारी किताबें किसी के घर पर पहली बार देख रही थी। इतनी किताबें तो पढ़ते हुए कॉलेज की लाइब्रेरी में ही देखी थी।

मैंने एक सोफ़े की कुर्सी पर कब्जा जमा लिया। तभी एक छोटी सी बच्ची कमरे में दाखिल हुई। ''गुड इवनिंग मैडम।''-उसने बड़ी दबी सी आवाज में कहा।

कॉपी, किताब उसके हाथ में थीं। मैंने उसे बैठने का इशारा किया।

निखिल के गुजर जाने के बाद घर का खर्च चलाने के लिए ट्यूशन करना मेरी मजबूरी थी। ट्यूशन के साथ ही बच्चों की परवरिश कर सकती थी। एक 8 साल की बेटी और दूसरी तीन साल की, उनकी परवरिश करना कितना कठिन है यह निखिल के जाने के बाद ही पता चला।

उस छोटी लड़की से मैंने नाम पूछा था। लड़की ने जबाव में कहा-''आई एम यशिता।''

ट्यूशन मेरी मजबूरी थी लेकिन इतनी छोटी बच्ची को ट्यूशन? जिन्होंने मुझे यहाँ भेजा था, उनसे क्लास और फीस की बात ही नहीं हुई थी। इस कमरे में बैठे हुए मैं कुछ असहज महसूस करने लगी थी। अनमने से ही सही लेकिन यशिता को पढ़ाने के लिए मैंने कॉपी खोलकर उस पर कुछ आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींच दीं। कुछ निर्देश दिए तो यशिका अपने काम में मग्न ही गयी और मैं... मैं... कहीं खो सी गयी। इतनी किताबें रखने वाला इंसान और बेटी के लिए लेडी ट्यूटर? मैं स्वयं कोई जवाब खोजती तभी एक आहट ने मेरा ध्यान भंग किया।

''हेलो, मिस...।''

''कनिका। माय नेम इज कनिका।''-मैंने स्वयं से कहा।

''यस आई नो।''

''....?''

शायद आपको याद नहीं, हम पहले भी मिल चुके हैं।''

मैंने दिमाग पर जोर डाला। चेहरा वाकई कुछ जाना पहचाना सा था। अनायास ही मेरे मुँह से निकला, ''मिस्टर सहाय......।''

''यस कनिका, आई एम मिस्टर सहाय। आप मुझे सुकुमार भी कह सकती हैं।''-मिस्टर सहाय ने कहा।

''ओके मिस्टर सहाय, आई मीन सुकुमार। आपका बड़ा नाम है, लेखन की दुनिया से बहुत परिचित तो नहीं लेकिन आपके चर्चे अखबारों और कुछ पत्रिकाओं में पढ़े जरूर हैं।''-मैंने उनसे कहा।

''ओह! तो आप साहित्य में रुचि रखती हैं?''

''ज्यादा तो नहीं लेकिन थोड़ा बहुत पढ़ लेती हूँ, बस समय मिलना चाहिए।''

अभी एक शांति सी कमरे में पसर गयी है। मैं यशिका की कॉपी पर निगाहें गड़ा लेती हूँ।

मिस्टर सहाय ने आराम कुर्सी को पकड़ा है। उसी के बराबर में एक छोटा सा फ्रीज़र है। मिस्टर सहाय ने एक बीयर और दो कांच के मग निकाल लिए थे।

मग में बीयर डलने की आवाज से मेरी निगाह ऊपर उठी। एक आदमी और दो मग? मैं कुछ बोलती इससे पहले ही मिस्टर सहाय ने एक मग उठाकर मेरी तरफ बढ़ाया, ''मिस कनिका, लीजिये कुछ ठंडा हो जाये।''

''जी लेकिन ये तो बीयर है, और...।'' मैं आगे कुछ बोल पाती उससे पहले ही मिस्टर सहाय बोल पड़े, ''मिस कनिका, बी बोल्ड यार, आप नए

जमाने की महिला हैं, निखिल के साथ एक जमाने में हमारे बिजनेस रिलेशन थे। आज वे यहाँ नहीं हैं। वक़्त ने उन्हें इस दुनिया से जुदा कर दिया। लेकिन आपके जज्बे को मैं सलाम करता हूँ। कितने सलीके से आपने गृहस्थी को संभाला है।"

''सब वक़्त की फैसला है सुकुमार।" मग को हाथ में लेते हुए मैंने कहा।

यशिका वहाँ से दूसरे कमरे में जा चुकी थी। मुझे महसूस हुआ, 'कितनी समझदार बच्ची है, उसे मालूम है कि पापा अगर अपनी लाइब्रेरी में हैं तो उसे वहाँ से चला जाना चाहिए। मुझे याद आया कि मिस्टर सहाय की पत्नी को गुजरे हुए दो साल से ज्यादा समय हो चुका है। याशिका तब मात्र डेढ़-दो साल की रही होगी, कितना मुश्किल होता है एक पिता के लिए माँ हो जाना? उतना ही मुश्किल है एक माँ के लिए पिता हो जाना।'

निखिल से मेरी मुलाकात एक शादी में हुई थी, इतना हैंड्सम लड़का देख मेरे दिल में कितने ही ख्वाबों ने एक साथ दस्तक दी। काश ये लड़का मेरी जिन्दगी में आये। मैं ये सब सोच ही रही थी कि निखिल मेरे पास आया और उसने कहा था, ''मिस! बहुत खुबसूरत हैं आप, क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ?''

''जी, कनिका शर्मा।"

''मिस कनिका, मुझे निखिल कहते हैं, छोटा सा कारोबार है, 'चोपड़ा सर्जीकल' के नाम से, जिसका प्रोपरायटर मैं ही हूँ। हैंडीकैप लोगों के उपकरण बनाता हूँ, ये एक समाजसेवा भी है और बिजनेस भी।"-निखिल ने एक ही पल में अपना पूरा बायोडाटा मेरे सामने रख दिया था।

इस एक मुलाकात ने हमें बहुत करीब का खड़ा किया। दो-चार मुलाकातों के बाद ही बात शादी तक पहुँच गयी थी। मेरे पापा डॉक्टर थे, इसलिए मेरे लिए अपनी ही लाइन के लड़के की खोज में थे। कितना लड़ी थी मैं निखिल के लिए। आखिर पापा को मेरी जिद्द के आगे झुकना ही पड़ा था, पापा की लाडली जो थी। पापा को जितना भी मेरी शादी में खर्च करना था वह सब पापा ने कैश के रूप में निखिल को देते हुए कहा था, ''बेटा! इस राशि को अपने बिजनेस को बढ़ाने में इस्तेमाल करना। नाजों से पाली है मैंने अपनी बेटी, जीवन भर साथ निभाना।"

साथ निभाने पर याद आया, वह एक मनहूस रात थी। निखिल अभी घर वापिस आये ही थे, उन्होंने कहा था, ''कनिका, बहुत जोरों की भूख लगी है, जल्दी से खाना लगाओ, मैं बाथरूम से फ्रेश होकर आता हूँ।"

मैं खाना लगा ही रही थी कि निखिल के मोबाइल पर कोई कॉल आया, पता नहीं क्या बात हुई, निखिल बाथरूम से निकले तो बोले, ''कनिका, जल्दी से हॉस्पिटल पहुँचना है, मेरे दोस्त का रोड एक्सीडेंट हुआ है, सीरियस हालत है, उसे इमिडियेट ब्लड की सख्त जरूरत है। कितना मुश्किल होता है छोटे शहरों में ब्लड का इंतजाम करना।"

मैंने निखिल को कहा था, ''निखिल इफ यू डोंट माइंड, मैं भी साथ चलूँ?''

कुछ सोचते हुए निखिल ने कहा, ''ठीक है, चलो लेकिन तैयार होने में ज्यादा समय मत लगाना, बस एक चुटकी सिन्दूर लगाकर तुम बहुत खुबसूरत लगने लगती हो।"

बिना समय गंवाए दुपट्टा उठा, चप्पल पहन मैं दो मिनट में निखिल के सामने थी, खाना डाइनिंग टेबल पर ढककर रख दिया था। तभी मैंने निखिल को कहा, ''सुनो, खाली पेट डॉक्टर, ब्लड नहीं लेते, एक रोटी खा लो।"

निखिल ने मुझे एक पल निहारा और खड़े-खड़े ही एक रोटी के ग्रास बनाकर दाँतों से काटते हुए कहा था, ''माय लवली स्टुपिड वाइफ, कितना

ख्याल रखती हो मेरा।"

हम दोनों बाइक पर बैठ हॉस्पिटल पहुँचे, ब्लड दिया और डॉक्टर से बातचीत करके हॉस्पिटल से निकल पड़े। अभी कुछ दूर ही चले थे, सामने से आते ट्रक से बाइक टकरा गयी। जब होश आया तो बस कुछ शब्द मेरे कानों में पड़े थे, निखिल इज नो मोर...।

मिस्टर सहाय की आवाज मेरे कानो में पड़ी, ''मिस कनिका, कहाँ खो गयीं? बियर का गिलास गरम हो जायेगा।"

''कुछ नहीं, सुकुमार! बस वह मनहूस रात याद हो आई थी, जब निखिल...।"

''हाँ कनिका! शहर की सबसे दर्दनाक रात थी वह, हमारे शहर में तब मातम का माहौल था। होनी बलवान है।"

मैंने मिस्टर सहाय से कहा, ''सुकुमार! आज मूड नहीं, आप बियर एन्जॉय कीजिये, फिर कभी कंपनी दूंगी।"-कहकर मैं हाथ में लिया गिलास मेज पर रख उठ खड़ी हुई थी।

यशिका को पढ़ाना शुरू कर दिया था। यशिका की रोजमर्रा की जरूरतें यूँ तो सुकुमार पूरी करते लेकिन मुझे महसूस हुआ, एक माँ के काम करने का जो तरीका होता है वह एक पिता का कभी नहीं हो सकता। धीरे-धीरे मैंने यशिका के बहुत से छोटे-मोटे काम करने/देखने शुरू कर दिए। मिस्टर सुकुमार बेटी का बहुत ख्याल रखते, उसके कपड़ों से लेकर उसकी अलमारी, उसके खिलौने, उसकी किताबें सब करीने से लगी होतीं, किचेन में नुडल्स से लेकर अन्य जरूरत की चीजें भी रखी होतीं, जब मैं पढ़ाने जाती तो यशिका का दूध तैयार करके मग उसके हाथ में रखती और कहती, ''हमारी बिटिया रानी जितनी जल्दी पीयेगी, उतनी जल्दी बड़ी होगी।" उसका जवाब होता, ''ओके मिस।" और एक बार में मग का दूध खत्म करके रख देती। मुझे यशिका के लिए काम करना अच्छा लगता।

इधर मैंने महसूस किया कि सुकुमार मुझसे खूब बातें करते, अपने निजी जीवन की, अपने लेखन की, अपने अकलेपन की। मुझे महसूस होता कि सुकुमार मुझसे कुछ कहना चाहते हैं लेकिन कह नहीं पाते। यशिका से स्नेह बढ़ता जा रहा था। मुझे लगने लगा- जैसे जिन्दगी की और जरूरतें है वैसे ही यशिका भी मेरी जरूरत में शुमार हो गयी है।

एक शाम मैं निर्धारित समय पर यशिका को पढ़ाने गयी। मैं अक्सर उसे सुकुमार की लाइब्रेरी में ही पढ़ाती थी। उस समय सुकुमार वहाँ नहीं आते थे। अभी एक घंटा ही बीता होगा, मैं लगभग सारा होमवर्क उसे करा चुकी थी, तभी सुकुमार लाइब्रेरी आये, मैंने कहा, ''सर, याशिका को होमवर्क करा दिया है, वह दूध भी पी चुकी है, सब्जियाँ बनी हुई हैं बस रोटियाँ सेक लेना। मैं अब निकलती हूँ।"

''रुकिए न मिस कनिका, हमसे तो आपको बात किये हुए अरसा ही हो गया। एक उधार भी बाकी है, इजाजत हो तो चिल बियर का एक-एक मग हो जाये।"

''सुकुमार, यूँ तो मूड नहीं लेकिन आपका आग्रह बार-बार टालने का मलतब आपको नाराज़ करना होगा और आपको हम नाराज़ करना नहीं चाहते।"-मैंने आगे कहा, ''लाइए, आज ड्रिंक्स हम बनाते हैं।" मैंने दो गिलास उठाये और बियर की बजाय वोडका की बोतल उठाकर दो पैग बनाये, एक में सिक्सटी एमएल और दूसरे में थर्टी एमएल, सोडा डाल कर एक गिलास में पानी डाला। गिलास मेज पर रख मैंने कहा, ''लीजिये सुकुमार! हैव अ चियर्स।"

दोनों ने अपना अपना गिलास उठाया और आपस में टकराकर होंठो से लगा लिया। सुकुमार ने कहा, ''मिस कनिका, इतना कम पानी आपके गिलास में?''

''मैंने पानी डाला ही कब? सिर्फ सोडा है, मैं ड्रिंक में पानी नहीं लेती और थर्टी एमएल के दो पैग से ज्यादा कभी नहीं।"

बातें हो रही थी, सुकुमार ने चौथा पैग ख़त्म कर लिया था, मेरा अभी दूसरा यानि लास्ट हाथ में था। गिलास रख नट्स उठाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया ही था कि सुकुमार ने मेरी कलाई को अपने हाथ में लेते हुए कहा, ''मिस कनिका, याशिका की कितनी जरूरतों में तुम हाथ बँटाने लगी हो, बहुत खुश रहती है वह तुम्हारा साथ पाकर।"

''जी।"- मेरे मुँह से निकला, मैंने अपनी कलाई छुड़ाने का कोई उपक्रम नहीं किया। बरसों बाद मुझे निखिल की छुवन जैसा ही का अहसास हुआ। मुझे लगा मानो सुकुमार के भेष में निखिल मेरे सामने बैठा कह रहा हो, ''कनिका! बच्चे तुममे इतने खोये रहते हैं कि मेरी याद ही नहीं आती तुम्हें।'' मेरी आँखों से आँसू टपकने लगे। सुकुमार का हाथ मेरे गालों पर था, मेरे आँसू पोछ उन्होंने कहा, ''मिस कनिका, लगता है कुछ पुराना याद आ गया। कहीं निखिल की यादें...?"

''जी, कभी-कभी निखिल की यादें बहुत पीछा करती हैं।" मैं थोडा नर्वस फील कर रही थी लेकिन सुकुमार की बातों में, उनके हाथों में एक अजीब आकर्षण था। कब मेरा हाथ पकड़कर उन्होंने अपने होठों से लगाकर चूमा, मुझे पता ही नहीं चला। जैसे एक इंद्रजाल मेरे चहु और है और मैं उनके नियंत्रण में हूँ। कुर्सियों के बीच की दूरी घट गयी थी और दो जिस्मों के बीच की भी। एक झटका मुझे लगा, मैंने कहा, ''सॉरी, सुकुमार हम कुछ ज्यादा आगे बढ़ रहे हैं और हाँ, बच्चे भी घर पर मेरा इन्तजार कर रहे होंगे।"-मैं एक झटके में उठी और बाय बोल घर के लिए चल दी।

रास्ते भर मैं विचारों के अंधड़ में घिरी रही। घर पहुँची तो बेटी को किचेन में पाया, मन किया सारा प्यार जो सुकुमार से बचाकर, छुपाकर लायी सब मेरी बेटी पर लुटा दूँ। बेटी ने कहा, ''ममा, छोटी खाने की जिद्द कर रही थी, मैंने सोचा एक परांठा बनाकर उसे खिला दूँ, लेकिन वह मैगी की जिद कर रही थी फिर पेस्ट्री की डिमांड करते करते सो गयी।"

मेरा हाथ मैगी के डिब्बे की ओर बढ़ा, देखा डिब्बे में कोई पैकेट शेष नहीं था, राशन के डिब्बे भी मेरी किस्मत की तरह खाली थे। मेरी आँखों के सामने सुकुमार का चेहरा घूमा, एक मुस्कान मेरे चेहरे पर फ़ैल गयी। रात में सोते वक़्त दोनों बेटी मेरे दायें-बाएँ थीं। घंटो मैं उनका सिर सहलाती रही, अश्रुधारा मेरा चेहरा गीला किये थी।

अगले दो दिन मैं यशिका को पढ़ाने नहीं गयी लेकिन ज्यादा दिन खुद को जाने से रोक नहीं पायी। मैं याशिका की जरूरत थी, मुझे वहाँ होना चाहिए। जैसे ही मैं वहाँ पहुँची तो देखा- सुकुमार किचेन में थे, याशिका के लिए उपमा बना रहे थे, मैंने कहा, ''लाइए, मैं बना देती हूँ, आप आराम कीजिये, और हाँ! चाय लेंगे या कॉफ़ी?''

''कॉफ़ी!''- सुकुमार ने कहा तो मैंने पूछा, ''लेकिन आप तो हमेशा चाय ही प्रिफर करते हैं, फिर आज...?"

''मिस निकिता, आप चाय पीती नहीं हैं, कॉफ़ी पियूँगा तो आप साथ देंगी ही।"

मैंने यशिका के लिए उपमा बनाते हुए ही दूसरे स्टोव पर कॉफ़ी बननी रख दी। समय बचाना भी जरूरी था ताकि याशिका का पिछले दो दिन का पढ़ाई का हर्जाना भी पूरा हो सके।

याशिका ने जल्दी ही उपमा खत्म किया और लाइब्रेरी में किताबें लेकर पहुँच गयी। मैंने कॉफ़ी के दो मग हाथ में लिए और सुकुमार से पूछा कि आप लिविंग रूम में कॉफ़ी पियेंगे या फिर लाइब्रेरी? उन्होंने लाइब्रेरी आने का बोला तो मैं मग ले लाइब्रेरी

की ओर बढ़ गयी।

याशिका को पाठ समझाकर मैंने कॉफ़ी का कप हाथ में लिया और सिप लेने लगी। मिस्टर सुकुमार भी आ चुके थे, आराम कुर्सी पर बैठ वह अपना कॉफ़ी का मग लिए बैठे रहे। मैं याशिका को पढ़ाने में व्यस्त हुई तो कुछ और देखने-समझने का दिमाग में नहीं आया।

याशिका ने अपना काम निपटाया और अपने रूम की ओर बढ़ गयी, मैंने कहा, ''सुकुमार, मैं जा रही हूँ, खाना खा लीजियेगा, याशिका को भी खिला दीजिये।''

जैसे ही मैं आगे बढ़ी, सुकुमार ने मेरी कलाई को पकड़ लिया। मेरी निगाह उनके चेहरे पर पड़ी, आँखों से निकले आँसू सूख चुके थे लेकिन निशान अभी तक बाकी थे, कॉफ़ी के मग में कॉफ़ी ठंडी हो चुकी थी। सुकुमार ने कहा, ''मिस कनिका कुछ पल बैठो। आपसे कुछ बात करनी है।''

''जी, कहिये।''- कहकर मैं कुर्सी खींच उनके पास बैठ गयी, ''बेटियाँ इन्तजार कर रही होंगी, छोटी कितनी ही बार इंतजार करके भूखे ही सो जाती है।'' मैंने कहा।

''मिस कनिका, यही तो मैं कहना चाहता हूँ, याशिका को भी आपकी जरूरत है और उन दोनों बच्चियों को भी, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तीनों बच्चियाँ साथ ही रहें ताकि तुम्हारी दो जगह की चिंता भी ख़त्म हो और मैं भी याशिका की बड़ी चिन्ताओं से मुक्त हो जाऊँ।''

मैं कुछ भी जवाब दे पाने की स्थिति में नहीं थी, मुझे लगा कि दो बच्चों की विधवा माँ को क्या ये अधिकार है कि वह किसी का दामन थाम समाज में किसी की लिवइन पार्टनर होने का बदनुमा दाग अपने माथे पर ले? क्या ये दाग लेकर वह कहीं आ जा सकेगी? मैं चुप बैठी रही।

मिस्टर सुकुमार आराम कुर्सी से उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगे। फिर आकर बैठ गए, एक छोटी सी डिब्बी उनके हाथ में थी। उन्होंने मेरी कलाई को हाथ में थामकर मेरी अंगुली में डिब्बी से अंगूठी निकालकर पहना दी। एक चीख मेरे अंदर से निकली, ''नहीं सुकुमार, यह नहीं हो सकता...। कैसे मैं निखिल को भुला सकती हूँ...?''

''मिस कनिका मैं कब कह रहा हूँ, कि तुम निखिल की यादों को भुला दो, बस मैं इतना चाहता हूँ कि आज से तुम मिसेज कनिका सहाय कहलाओ। इजाजत दो तो कल ही कोर्ट जाकर शादी की फोरमेलिटी पूरी करता हूँ, किसी के साथ लिवइन में रहने का मैंने कभी ख्वाब नहीं पाला।''

याशिका का चेहरा मेरी आँखों के सामने तैरने लगा, मेरे कान मानो उसके मुँह से माँ सुनने को लालायित हों, अगले ही पल निखिल का चेहरा मेरे जेहन में आया, वह मुस्कुराता कह रहा था, ''कनिका, मैं तो बीता हुआ कल हूँ, अभी शेष पूरा जीवन तुम्हारे सामने है।'' एक अश्रुधारा मेरी आँखों से बह निकली।

क 2/1 जीवन पार्क, उत्तम नगर,
नई दिल्ली - 110059
मोबाइल :8377875009

(धारावाहिक उपन्यास)

पारस

-आशा शैली

मृत्यु की विभीषिका क्या होती है यह बात नन्हा पारस कैसे जान सकता था? अभी तो उसे अपनी दैहिक आवश्यकताओं से अधिक कुछ भी पता नहीं था। घर, मुहल्ले-पड़ोस के लोगों को रोता देखकर वह घबरा गया था, सो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। वह घर में चारों तरफ माँ को तलाशता फिर रहा था और माँ थी कि चैन से सिर तक सफेद चादर ओढ़े चुपचाप धरती पर सो रही थी। कोई उससे यह भी नहीं कह रहा था कि उठकर पलंग पर लेट जाए, लेकिन मुँह ढका होने के कारण पारस उसे देख नहीं पा रहा था। वह तो पूरे घर में माँ को तलाशता नन्हें पगों डगमग-डगमग डोलता इस कमरे से उस कमरे तक रोता फिर रहा था। कभी वह माँ के पलंग के पास चला जाता तो रिश्ते की कोई चाची-बुआ उसे उठा लाती और बहलाने की कोशिश करने लगतीं। इसी बीच त्रिखा जी ने पारस को उठाकर छोटी बहन सत्या के हवाले कर दिया। वह किसी काम से भीतर आए थे।

''जा बेटा जा, अपनी बुआ के पास जा।'' उन्होंने पारस को पुचकराते हुए बहन को निर्देश दिया, ''जा सत्तो, इसे भूख लगी होगी। बिचारा कब से रो रहा है, जा दूध पिलाकर इसे सुला दे।''

सत्तो, अर्थात् सत्या ने बिना कुछ कहे आँसू पोंछते हुए सिर हिलाया। बड़े भाई की गोद से पारस को लेकर रसोई की ओर बढ़ गई। पारस सच में भूखा था, दूध पीकर सो गया। भाभी के ही पलंग पर उसे सुलाते हुए सत्या भी सो गई थी। जब उसकी आँख खुली तो घर में भयंकर क्रंदन मचा हुआ था। उसने घबराकर दरवाजा बन्द कर दिया कि कहीं शोर सुनकर पारस न जग जाए।

बाहर से शव यात्रा जा चुकी थी।

......

सारा दिन घर में सन्नाटा पसरा रहा, संध्या तक लोग श्मशान से लौटने लगे थे। अब तक सभी आवश्यक रस्मों को निपटा कर अपने छोटे भाई विधुर सोमनाथ को सहारा दिए त्रिखा जी भी भीतर लौट आये। सोमनाथ पलंग से लिपट कर दहाड़ें मार कर रोने लगा तो उस पर सोया पारस चिहुँक कर फिर से रोने लगा। त्रिखा जी ने फिर सत्तो को आवाज़ देकर बुलाया और सत्तो चुपचाप आकर पारस को ले गई।

घर में पारस की माँ पिता के अतिरिक्त बुआ, नन्हा पारस बस इन को ही पहचानता था इसलिए अब माँ को न देखकर बुआ के साथ ही चिपक गया। त्रिखा जी अर्थात् 'दीवानचन्द त्रिखा' तो वैसे भी पंजाब सचिवालय की नौकरी के कारण रावलपिण्डी शहर में रहते थे। गाँव तो उनका आना-जाना बस फसल के काम से ही होता था, वह भी अधिकतर 'सोमा' अर्थात् सोमनाथ ही देख लेता था। त्रिखा जी की पत्नी और उनके बच्चे भी शहर ही में रहते थे। नौकरी का मामला था, क्या करते? पर सुख-दुःख तो बना ही हुआ था और इससे बड़ा क्या दुःख होगा? उन के पिता जी को कोई एतराज न दीवान के नौकरी करने से था और न सोमनाथ के, इसीलिए उन्होंने दोनों की पढ़ाई में किसी तरह की कमी नहीं रखी थी। लेकिन स्वभाव से अक्खड़ सोमनाथ तो खुद ही नौकरी पसन्द नहीं करता था। उससे किसी का हुकम नहीं माना जाता था। सैकड़ों बीघा ज़मीन का मालिक वह किसी की ग़ुलामी करेगा? सोचकर ही उसे हँसी आती थी और

इसी में सबकी भलाई भी थी।

पिता जी सोचा करते, भगवान जो करता है भले के लिए ही तो करता है। 'अगर दोनों बेटे ही नौकरी करने लगेंगे तो कल को ज़मीने कौन सँभालेगा?' उन्होंने तो सोमनाथ को भी पढ़ने की पूरी छूट दी थी, पर वह खुद ही बी.ए. से आगे नहीं बढ़ा तो वे क्या कर सकते थे। उन्हें सोमनाथ के खेती-किसानी के प्रति लगाव को देखकर उन्हें बड़ी सन्तुष्टि होती। पढ़ा-लिखा बेटा खेती करता है तो और भी अच्छा है। नौकरों का क्या, कभी कोई काम छोड़कर जा रहा है तो कभी कोई। दूसरे ज़मीदारों की तरह उन्होंने ग़ुलाम भी तो नहीं बना रखा था मज़दूरों को। पूरी छूट दी है उन्हें, जिसके बच्चे चाहें पढ़ें या शहर में नौकरी करें। त्रिखा जी की माँ तो बहुत पहले ही चली गई थी। तब शायद सोमनाथ पन्द्रह साल का रहा होगा, चार दिन के बुखार ने माँ को छीन लिया था।

सत्या तब दस साल की थी। हाँ, बड़े बेटे की नौकरी लग गई तो पिता जी ने उसकी शादी कर दी थी। अच्छा घर देखकर सत्या को भी विदा कर दिया गया था। उस समय सोमनाथ मुश्किल से बाईस पार कर सका था, कि उसकी शादी पड़ोस के गाँव की पन्द्रह वर्षीय सुन्दर और सुशील कन्या जानकी से कर दी गई। जब उसे आगे नहीं पढ़ना और नौकरी भी नहीं करनी तो घर को सम्भालने वाली एक औरत आ जाए तो क्या बुरा है। इस तरह सोमनाथ की शादी से घर सम्भल गया था और अब घर का पूरा दारोमदार जानकी पर ही था। अब जब वह भी नहीं रही तो चारों ओर एक हाहाकार पसर गया।

त्रिखा जी काम में सोमनाथ की कोई मदद नहीं कर सकते थे पर उससे कभी कुछ माँगते भी नहीं थे या उन्हें मांगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। सोमनाथ जब भी रावलपिण्डी जाता तो अपने मन से ही गेहूँ की बोरियाँ, दालें, दूध, पनीर और घी के कनस्तर भर कर, जो भी उपलब्ध होता वह लेकर ही जाता था। त्रिखा जी भी शहर की सौगात घर के लिए कुछ न कुछ देते ही रहते। अभी पिछले ही साल उन्होंने दो कमरे पक्के करवा दिए थे। जब घर आए तो देखा, दूध देने वाली भैंसों की कमी हो गई थी। झट से दो भैंसें खरीद लाए पड़ोस के गाँव से। यानि दोनों भाइयों का आपसी ताल-मेल एकदम ठीक था। सोमनाथ जहाँ बड़े भाई का अदब करता, वहीं त्रिखा जी भी छोटे भाई और उस की पत्नी को अपने बच्चों जैसा मानते थे, पर यह वातावरण तो सारे गाँव का ही था। वहाँ तो गाँव के बड़ों को भी अपने सगे-सम्बंधियों जैसा ही मान-सम्मान दिया जाता था। कभी किसी को किसी के लिए, लगता ही नहीं था कि कोई दूसरे घर का है।

सोमनाथ के विवाह के दो साल बाद घर में फिर से रौनक हो गई। पारस का जन्म हुआ, परन्तु पारस का जन्म होने के छः महीने बाद ही पिता जी स्वर्गारोहण कर गए। फिर भी दीवान चन्द त्रिखा को ज्यादा परेशानी नहीं थी। दीवान चन्द तो पहले ही रावलपिण्डी में रहते थे। पिता जी के न रहने से अब पूरे घर की सारी जिम्मेदारी सोमनाथ और उसकी पत्नी पर आ गई। घर में बंधी छः भैंसें, चार गउएँ, नौकरों की रोटी-पछाँही (तीसरे पहर का अल्पाहार) सभी का जिम्मा इन दोनों का था। सत्या भी कब तक साथ देती? शादी के बाद वह भी तो दूसरे घर की हो गई थी। हाँ, अभी उसके पास कोई बच्चा नहीं था।

वह तो सत्या के ससुराल वाले भी अच्छे थे तो वह मायके कई-कई दिन आकर रह जाती। उसका बार-बार मायके आना ससुराल वालों को इसलिए भी भला लगता था क्योंकि दो भाइयों की अकेली बहन होने के कारण विदाई पर खूब सारा सामान

मिलता था। पर इस समय तो मामला ही दूसरा था। किसी के पास कहने को कुछ नहीं था।

अभी त्रिखा जी की पत्नी कैलाश भी वापस नहीं गई थी। मृतक कर्म भी जरूरी थे और सारी जिम्मेदारी घर के बड़े बेटे-बहू पर थी । एक गहन शोक पसरा हुआ था। जवान मौत, उसपर दुधमुँहा पारस, सब को उस पर दया आती। अक्सर ही सोमनाथ उसे कलेजे से लगाकर रो पड़ता तो त्रिखा जी और कैलाश उसे दिलासा देने की कोशिश करते। कभी-कभी सत्या भी पास आ बैठती,

''काका जी! इस तरां तो काम नहीं चलेगा ना।'' सोमनाथ भी समझते थे चुपचाप आँसू पोंछ लेते और उठकर बाहर निकल जाते।

इस समय घर के बड़ों में त्रिखा जी और उनकी पत्नी कैलाशवती ही थे जिन्हें सब 'बीजी' कहते। वे दोनों पति-पत्नी इस समय जरूरी रस्में निभाने में उलझे हुए थे। पारस लौट-फिर कर फिर से बुआ के पास आ जाता। सत्या भी इस सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ सकती थी और नन्हें पारस को गोद में लेकर प्यार से पुचकारने लगती।

....

देखते ही देखते तेरह दिन बीत गए थे। धीरे-धीरे सब सामान्य होने लगा तो त्रिखा जी भी अपनी नौकरी पर लौटने की बात सोचने लगे पर अभी सत्रहवीं तक तो उन्हें रुकना ही था। प्रगति के चरण अभी गाँव से बहुत दूर थे सो परम्परा के अनुसार धर्मशान्त (ब्राह्मण भोज) के बाद ही शोकशुद्धि होती, तभी वे कोई दूसरा काम कर सकते थे। अभी शहर जाकर दो दिन बाद फिर गाँव आ जाएँ सम्भव नहीं था, आखिर कितनी छुट्टी लेंगे? इस के अलावा गाँव-बिरादरी के रिवाज के हिसाब से रोज रात को सारा गाँव ही उनके पास 'बैठने' आता। सोमा अकेला क्या करेगा? त्रिखा जी! पत्नी सहित सारे कारोबार की निगरानी कर तो रहे थे फिर पुराने और वफादार नौकर-चाकर जानवरों और ज़मीन को बिना किसी निर्देश के अपने-आप ही सँभाल रहे थे। सभी को इस परिवार से हमदर्दी थी क्योंकि दोनों भाइयों ने उन्हें कभी यह अहसास ही नहीं होने दिया था कि वे नौकर हैं।

त्रिखा दम्पति ने महसूस किया कि गाँव की औरतों में अलग और मर्दों में अलग-अलग से खुसर-पुसर होने लगी है, ''अब सोमा क्या करेगा? छोटा-सा बच्चा कैसे पालेगा? इसे दूसरी शादी कर लेनी चाहिए,'' जनाने हिस्से में बैठी एक औरत कह रही थी।

''कौन देगा, एक बच्चे पर अपनी बेटी?' तभी एक तरफ़ से आवाज़ आई। उधर मर्दों की टोली में भी कुछ इसी तरह की खुसर-पुसर चल रही थी,

''मेरी बेटी की बात कर लो, अगर त्रिखा जी मान जाते हैं तो अगले नरातों (नवरात्रि) में फेरे कर दूँगा।'' साथ के गाँव से आए परमेशर की बात पर उसकी तरफ देखकर सब ने सहमति में सिर हिलाया, ''अच्छा है, बेचारे सोमनाथ का घर बस जाएगा।''

त्रिखा जी गुमसुम से जमीन पर बिछी हुई दरी पर एक तरफ बैठे अपनी ही सोच में थे कि करमा उनके पास आ बैठा, वह उनका बचपन का लंगोटिया यार था। उन्होंने उसे उदास नज़रों से देखा तो उसने त्रिखा जी के कन्धे पर हाथ रखा, ''दवान्या मैं आखना, (दीवाने, मैं कहता हूँ) सोमे दा रिश्ता कर दे। सोमनाथ के ब्याह की सोच। कुछ नहीं विगड़या।''

क्रमशः

हिन्दी भाषा और विराम चिह्न – डॉ. विजय कुमार सिंघल

किसी भी भाषा में विराम चिह्नों का बहुत महत्व होता है। ये लिखी गयी बात का अर्थ स्पष्ट करने में बहुत सहायता करते हैं। गलत विराम चिह्न के उपयोग से अर्थ का अनर्थ हो सकता है लेकिन खेद है कि अनेक धुरंधर रचनाकार भी अपनी रचनाओं में इनका पूरा ध्यान नहीं रखते। यहाँ हम सामान्य रूप में होने वाली गलतियों और उनके निराकरण के बारे में लिख रहे हैं।

पूर्ण विराम- यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इसी से पता चलता है कि कोई वाक्य कहाँ से प्रारम्भ होकर कहाँ पर समाप्त हो रहा है। अनेक लेखक इसकी उपेक्षा करते हैं और कहीं पूर्ण विराम लगाये बिना लिखते चले जाते हैं। यह अनुचित है। हमें पूर्ण विराम का उपयोग अवश्य करना चाहिए। पूर्ण विराम के लिए हिन्दी में एक खड़ी लकीर या पाई (।) का प्रयोग किया जाता है। अधिकांश हिन्दी कीबोर्डों में इसके लिए व्यवस्था होती है। जहाँ पूर्ण विराम का बटन न हो, वहाँ एक बिन्दु या डॉट (.) का प्रयोग पूर्ण विराम के लिए किया जा सकता है। लेकिन इन दोनों के अलावा किसी चिह्न का प्रयोग पूर्ण विराम के लिए करना उचित नहीं है, जैसे- कैपीटल आई (I), छोटी एल (l), तीन या अधिक लगातार बिन्दु (....), लम्बी खड़ी लकीर (|), विस्मयादिबोधक चिह्न (!) आदि। इनसे सम्पादक को खीझ हो जाती है।

अर्द्ध विराम (कॉमा) अर्द्ध विराम भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसका उपयोग दो वस्तुओं या वाक्यांशों को अलग-अलग दिखाने के लिए किया जाता है। जैसे- राम, श्याम और मोहन खेल रहे हैं। यहाँ राम के बाद कॉमा लगाया गया है और उसके बाद एक स्पेस देकर अगला शब्द टाइप किया गया है। यही कॉमा का सही उपयोग है। कई लोग इसमें मनमानी कर जाते हैं और राम के बाद के बजाय श्याम से पहले कॉमा लगा देते हैं या कॉमा के बाद स्पेस नहीं देते या आगे-पीछे दोनों जगह स्पेस दे डालते हैं। ऐसी गलतियाँ नहीं करनी चाहिए।

रिक्त स्थान (स्पेस) बहुत से रचनाकार स्पेस का भी घोर दुरुपयोग करते हैं। वे वाक्य में कहीं भी एक साथ दो या अधिक स्पेस दे देते हैं या कई बार दो शब्दों के बीच भी स्पेस नहीं देते। इसलिए ध्यान रखिए कि हर वाक्य में दो शब्दों के बीच स्पेस देना और हर पूर्ण विराम तथा अर्द्ध विराम के बाद स्पेस देना आवश्यक है।

कोष्ठक लगाते समय हमें प्रारम्भिक कोष्ठक चिह्न से पहले और अन्तिम कोष्ठक चिह्न के बाद स्पेस अवश्य देना चाहिए। इसके विपरीत कहीं स्पेस देना गलत होता है। उदाहरण के लिए- हमारे अंकल (मेरे ताऊ) कल आयेंगे। यह कोष्ठक और स्पेस का सही उपयोग है।

संदर्भ चिह्न- अनेक रचनाकार संदर्भ चिह्नों का भी मनमाना उपयोग करते हैं या करते ही नहीं। अनेक कहानी लेखक संवादों को संदर्भ चिह्नों में रखे बिना लिखते चले जाते हैं। इससे यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि किसकी बात कहाँ से शुरू और कहाँ खत्म हो रही है। इसलिए हमें सभी संवाद अलग-अलग करने के लिए संदर्भ चिह्नों का उपयोग करना चाहिए। एकल (' ') या युगल (" ") संदर्भ चिह्नों में कोई अन्तर नहीं है, लेकिन यदि संवाद के भीतर संवाद हो, तो बाहरी संवाद के लिए युगल और भीतरी संवाद के लिए एकल संदर्भ चिह्न लगाने चाहिए। इन पर भी स्पेस के नियम कोष्ठकों की तरह लागू होते हैं अर्थात् प्रारम्भिक संदर्भ चिह्न से पहले और अन्तिम संदर्भ चिह्न के बाद स्पेस अवश्य देना चाहिए।

संदर्भ चिह्नों का प्रयोग उपनाम लिखने में भी किया जाता है, जैसे- तूफान सिंह "उग्र"। यह सही तरीके से लिखा गया है। यहाँ कुछ प्रमुख विराम चिह्नों के उपयोग की ही संक्षिप्त चर्चा की गयी है। इनका पालन करने से आपकी रचना में निखार आता है। इसलिए इनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

देवनागरी लिपि की विशेषता इसकी मात्राएँ हैं। इन्हीं मात्राओं में नागरी लिपि और हिन्दी भाषा की शक्ति छिपी हुई

है। केवल 12 मात्राओं और 36 व्यंजनों में मानव वाणी के सभी सम्भव स्वर समाये हुए हैं। इसलिए किसी भी भाषा को कोई भी शब्द नागरी लिपि में अधिकतम शुद्धता के साथ लिखा जा सकता है।

यह इसकी विशेषता है कि कोई शब्द जिस तरह उच्चारित किया जाता है, ठीक उसी तरह लिखा भी जाता है। लिखने और बोलने में कहीं कोई विषमता है ही नहीं, जैसी कि अन्य अनेक लिपियों और भाषाओं में पायी जाती है। इसलिए इसमें किसी शब्द की वर्तनी रटने की कोई आवश्यकता ही नहीं है, यदि आपको उसका सही-सही उच्चारण करना आता हो।

फिर भी खेद का विषय है कि साधारण जन ही नहीं, वरन् बड़े-बड़े धुरंधर लेखक तक हिन्दी लिखते समय वर्तनी की विशेषतया मात्राओं की गलतियाँ करते हैं और इस बात पर उन्हें को खेद होता भी प्रतीत नहीं होता। मुख्य रूप से छोटे स्वर और बड़े स्वर की मात्रा लगाने में बहुत मनमानी होती है। किसी भी मात्रा को कहीं भी लगा देना कई रचनाकारों की आदत है, जिसे सुधारने की बहुत आवश्यकता है।

यह घोर आश्चर्य की बात है कि अधिकतर रचनाकार 'कि' और 'की' शब्दों का अन्तर नहीं जानते और किसी का भी कहीं भी उपयोग या दुरुपयोग कर लेते हैं। उन्हें समझना चाहिए कि 'की' अंग्रेजी शब्द 'ऑफ' का एक हिन्दी स्त्रीलिंग पर्याय है, जबकि 'कि' शब्द अंग्रेजी के 'दैट' शब्द का समानार्थी है।

इसी तरह बहुत से रचनाकार ओर-और, में-मैं, है-हैं, बहार-बाहर आदि शब्दों में अन्तर नहीं करते। ऐसे रचनाकारों को चाहिए कि वे एक हिन्दी शब्दकोश खरीद लें और कहीं भ्रम होने पर उसमें सही वर्तनी देखकर उपयोग में लायें। जब 'हूँ' की जगह 'हुँ', 'ऊर्जा' की जगह 'उर्जा' लिखा हुआ दिखायी देता है, तो पाठक अपना सिर पीटने के अलावा कुछ नहीं कर सकता।

इसलिए अपनी श्रेष्ठ भाषा और सर्वश्रेष्ठ लिपि के हित में हमें मात्राओं की गलतियाँ करने से बचना चाहिए, ताकि अपने लेखन को त्रुटिमुक्त बनाया जा सके।

संपादक
जय-विजय ई पत्रिका

ये कैसा सिला..? –अमृता पांडे

स्वच्छता अभियान के तहत कूड़ा एकत्र करने के लिए घर घर आने वाली गाड़ी में 'स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने' गीत बज रहा था और गाड़ी उसके द्वार पर खड़ी थी पर वह अनमनस्क सी कहीं खाई हुई थी। अखबार में दिखाए गए उस मासूम बच्चे का चेहरा बार-बार उसकी आँखों को भिगो रहा था जो इस बेरहम दुनिया को देखे बगैर ही अलविदा कह गया था।

''दीदी, ज़ल्दी कूड़ा डालिए।" अचानक उसकी तंद्रा टूटी। गैलरी में रखी हुई कूड़े की बाल्टी उठाकर लायी और गाड़ी के पिछले हिस्से में कूड़े के साथ बैठे हुए उस छोटे लड़के को पकड़ा दी। लड़के ने डस्टबिन खाली करके उसे वापस कर दिया और उस कूड़े को अलग-अलग बैगों में भरने लगा। अपने ही घर के जिस कूड़े से हमें बदबू और घिन आती है, उसे वह छोटा बच्चा बिना दस्ताने पहने हाथों से अलग अलग कर रहा था। इसमें सब्जी और फलों के छिलकों से लेकर अन्य कई तरह के अपशिष्ट पदार्थ थे। इस पर भी समाज में इन लोगों के साथ ऐसा बर्ताव? मटका छू लेना या प्यासा होने पर पानी पी लेना क्या इतना बड़ा अपराध था कि किसी बच्चे की जान ही ले ली जाए?" वह सिहर गयी। कल हम आज़ादी की पिछत्तरवीं वर्षगांठ मनाएंगे। जगह जगह अमृत महोत्सव के कार्यक्रम चल रहे हैं। स्वच्छता अभियान भी जोरों पर है पर मन की स्वच्छता......"

वह डस्टबिन किनारे रखकर बेमन से समाचार पत्र में आज़ादी के बाद के वर्षों की उपलब्धियों पर नजर डालने लगी जो उसे बेमानी तो लग रही थीं पर अगले दिन आयोजित होने वाले एक सार्वजनिक कार्यक्रम के भाषण में दोहरानी थीं।

जे.के.पुरम-21, छोटी मुखानी,
हल्द्वानी-263139 जिला नैनीताल,
उत्तराखंड, मो.7983930054

सौदा
-नज़्म सुभाष

======

''पापा मेरा बस्ता फट गया है।"

''ठीक है बाबू ....ला दूँगा।"-कहने को तो कह दिया पर लाए कैसे?

पूरे दिन की कमाई 100/150 रुपए पर सिमट गई है। पितृपक्ष में कोई काम नहीं करना चाहिए पता नहीं किस कम्बखत ने ऐसी अफवाहें उड़ा रखी हैं..... क्या पितृपक्ष में लोग खाना नहीं खाते?

आज तो बिटिया ने जिद ही पकड़ ली -''आप रोज-रोज कहते हैं ला दूँगा पर लाते नहीं, अब मैं स्कूल तभी जाऊँगी जब बस्ता लाएंगे।....बच्चे चिढ़ाते हैं।'' पाँच साल की बेटी परिस्थितियाँ क्या समझे? उसके लिए तो सबसे बड़ी समस्या यही थी कि बच्चों के उसे चिढ़ाते हैं।

उसकी बात अनसुनी कर के वह ठीहे पर चला आया। बाजार में वह पुराने कपड़ों की मरम्मत का काम करता है। किसी तरह धकर-पकर गाड़ी चल जाती है बस....।

आज तो उसे हर हाल में बस्ता ले ही जाना पड़ेगा। शाम हो आई पर काम-धाम ....ऊंट के मुँह में जीरा।

सुबह आते समय एक बुक शॉप पर उसने बस्ते का रेट पूछा था तो डिस्काउंट के बाद 250 रुपये का बताया था। उसने सोचा था...काश! आज 250 रुपये का ही काम हो जाता ....पर कहाँ? ग्राहकों की राह तकते-तकते पूरा दिन गुजर गया पर अब कौन आएगा....अब तो उम्मीद की कोई किरण नजर नहीं आती। उसने जेब से तुड़े-मुड़े सारे नोट और सिक्के निकाले, एक भरपूर नजर उन्हें देखा जैसे उन्हे नजरों से तौल रहा हो। वह गिनने लगा ।

80 ...90... 100 ...102 ...107..108 ...113 टोटल 135 .....। बस्ता आज भी नहीं आ पाएगा। फिर बिटिया पढ़ने कैसे जाएगी? सवाल तो अनुत्तरित ही रह गया।

उसने दीवार की टेक लगाकर आँखें बंद कर ली। जैसे आँख बंद कर के सारी समस्याएँ खत्म हो जाती हों। उसके हाथ में और था भी क्या..... क्या कर सकता था वह? हर तरफ मंदी ....बाजार में ग्राहक कम सन्नाटा ज्यादा है। पहले नोटबंदी और उसके बाद जीएसटी ने व्यापारियों की कमर तोड़ दी। छोटे-मोटे कामगार तो भुखमरी की कगार पर पहुँच चुके हैं। उसका भी यही हाल है।

कुछ देर बाद उसे महसूस हुआ कोई आ रहा है उसने आंखें खोलीं।

एक बुजुर्ग उसकी तरफ आ रहे थे। आँखों में चमक उतर आयी। बुजुर्ग पास आकर उसे काम समझाने लगे।

''ठीक है सर हो जाएगा ...मगर कल मिलेगा। "

''वह तो ठीक है ...मगर खर्चा कितना आएगा?"

''140रुपये...।"

''बहुत ज्यादा बता रहे हो।"

''सर एकदम सही पैसे बताए हैं।"

''पेंशनर आदमी हूँ... कुछ तो रियायत करो ..।"

''सर आप तो पेंशनर हैं ...आपको कुछ तो मिल ही जाता है मगर हम तो पूरा दिन बर्बाद करके भी खाली हाथ हैं।" कहते समय उसकी आँखों में नमी उतर आयी थी।

''क्या पेंशन मिलती है.... " बुजुर्ग जैसे कहीं खो गये। फिर बुझे स्वर में बोले, ''ठीक है ...काम अच्छा करना।"

''बिल्कुल सर ...शिकायत नहीं मिलेगी।"

बुजुर्ग जाने लगे।

''एक मिनट सर।" उसने आवाज दी। बुजुर्ग रुक गये।

''सर, क्या पैसे मुझे आज दे सकते हैं?"

''पर क्यों ...? कपड़े तो कल मिलेंगे।"

''हाँ! लेकिन यदि पैसे आज देंगे तो 140 के बजाए 115 ही ले लूंगा।"

''बुजुर्ग कुछ देर सोचते रहे फिर 115 रुपये निकाल कर उसे दे दिये।

उसने झपटकर रुपये ले लिये। जैसे मुँह मांगी मुराद मिल गयी हो। उसने उन्हें चूमा फिर आँखों से लगा लिया। 25 रुपये बस्ते में डिस्काउंट की बात हुई थी। वह इधर चले गये लेकिन उसे उम्मीद थी बिटिया कल से स्कूल जरुर जाएगी।

356/केसी-208
कनकसिटी आलमनगर
लखनऊ-226017

कहानी-

छुट्टी का एक दिन

-राम नगीना मौर्य

सुबह बिस्तर छोड़ते ही आदतन या कह लीजिए फितरतन, उसने अपनी हथेलियाँ आपस में रगड़ते आँखों को लगाया, तत्पश्चात् फर्श को स्पर्श करने के बाद अपने पैर जमीन पर उतारे। उसे बड़े जोर की सू-सू लगी थी। तेज कदमों टॉयलट की ओर भागा। लघुशंका के बाद किचन में आकर सॉसपैन में दो गिलास नापकर पानी लेते उसे गैस पर चढ़ा दिया। गुनगुना पानी पीते हुए, रोजाना की तरह उसने चाय बनानी शुरू की। गैस की आँच धीमी करते, जब तक चाय बनकर तैयार होती, वो मेन-गेट का ताला खोलकर आज का अखबार ले आया। अगले पल चाय का प्याला और अखबार लेकर वो डॉयनिंग-टेबल पर आकर जम गया।

चाय पीते-पीते ही उसने अपने रोजमर्रा के कार्यों की लिस्ट भी देखी, जिसे वह अमूमन अपने कुर्ते के ऊपरी जेब में ही रखता है। आज की तारीख में किसी से अप्वॉइटमेंट नहीं था।---'ओ-हो! आज तो मैंने ऑफिस से छुट्टी ले रखी है।' जैसे उसे अचानक ध्यान आया। छुट्टी लेने के पीछे कोई खास वजह नहीं थी। विगत माह वित्तीय वर्ष की क्लोजिंग की व्यस्तता, फिर एक-दो जगह के ऑफीशियल-टूर इत्यादि। महीने भर की गहमा-गहमी, भागमभाग के बाद उसे बड़ी थकावट-सी महसूस हो रही थी सो उसने एक दिन की छुट्टी ले रखी थी।

काम-काज की लिस्ट को उसने आगे पढ़ा---'अगले महीने कार-इन्श्योरेन्स का प्रीमियम ड्यू है। उसके अगले महीने दुपहिया के इन्श्योरेन्स का प्रीमियम जमा करना है। टैक्स-रिटर्न तो वह दाखिल कर चुका है। अब इस काम को लिस्ट से हटा देना चाहिए। बैंक में जमा एक एफ्. डी. जो अगले महीने मेच्योर हो रही है, उसे रिन्यू कराना है। लेकिन अभी तो इसमें समय है---तो क्या आज के लिए उसके एजेंडे में कोई काम नहीं है? क्या आज की छुट्टी खामख्वाह ही बेकार चली जायेगी?'---थोड़ी देर तक वो यूँ ही बड़बड़ाता, खुद से बतियाता रहा। लेकिन वह यूँ सारा दिन घर में खाली बैठे-बैठे करेगा भी क्या?

इसी उहापोह में आज का अखबार वो लगभग एक घण्टे में ही चट कर गया। रोजाना की लगभग वही खबरें---'कहाँ ठगी हुई, किसने किया फर्जीवाड़ा, अवैध तमंचे मिले, पुलिस ने तीन को दबोचात्र्, बदमाशों ने अपने साथी को गोली से उड़ाया, प्रेमिका के उकसाने पर की हत्या, चालक की लापरवाही से हुआ हादसा, कड़ी सुरक्षा के बीच परीक्षा, पार्टियों ने जातिगत समीकरण साधे'---। 'सिने स्टार के शहर आगमन पर प्रशंसकों में भगदड़'---इस शीर्षक से प्रकाशित खबर को पढ़ते लगा कि ये प्रशंसक भी गजब फुरसतिहा होते हैं। सरसरी तौर पर वह अखबार की हेडलाइन्स देखते, राशिफल पढ़ते आगे बढ़ गया। अग्रलेख आदि तो वह अमूमन इत्मिनान से रात को सोने से पहले पढ़ता है।

''ओ-हो! कितना कुछ पढ़ा जाना बाकी है?'' पिछले महीने पुस्तक मेले से खरीदकर लायी गयीं, सामने की रैक में रखी करीब डेढ़ दर्जन किताबों को जिनका पढ़ना समयाभाव के दृष्टिगत टलता जा रहा था, देखते वह मन-ही-मन बुदबुदाया। लेकिन, अभी तो कुछ भी पढ़ने का मन नहीं था उसका।

'---अब क्या किया जाये? देखता हूँ---घर में कोई ऐसा जरूरी काम तो नहीं, जो काफी समय से पेंडिंग पड़ा हो? ओ-हो! याद आया। घर के ऊपरी तल में बॉथरूम की टोंटी महीनों से टपक रही है, उसे बदलवाना था।' कहते-कहते आजिज आकर पत्नी ने भी अब उससे इस बारे में कहना छोड़ दिया था।

हालांकि, पत्नी की बातों को वो जानबूझ कर नहीं टालता, पर क्या करे, उसे कामकाज की भाग-दौड़ में प्लम्बर के पास जाने का मौका ही नहीं मिला। 'बहरहाल--आज सबसे पहला काम उस टोंटी को ही ठीक करा दिया जाय।'

प्लम्बर को बुलवाकर, दिन के ग्यारह बजे तक टोंटी तो ठीक करवा दी। अब क्या किया जाय--? खैर---अब नहाने, नाश्ते आदि के बाद सोचूँगा कि आगे दिन में क्या करना है?' उसे नाश्ता देने के बाद पत्नी पड़ोस में श्रीमती गहलौत जी के घर उड़द की बड़ियाँ बनवाने चली गयी। नाश्ते के बाद वो सामने के बरामदे में आते, वहाँ रखी एक कुर्सी खींचकर बैठ गया। कुछ सोचते, या शायद समय बिताने वास्ते उसने सामने तिपाई पर पड़े अखबार को फिर से उठा लिया। इस बार उसने सम्पादकीय पृष्ठ पर छपे लेखादि, 'राजे-रजवाड़े बनाम आम-जनता, चुनाव और हमारी उम्मीदें, --भी पढ़ डाले।

अखबार खत्म करने के बाद उसने अपनी जेब से फोन निकालकर देखा तो उसमें दो मिस्सड-कॉल पड़े थे। पहली कॉल कॉलेज के दिनों के एक मित्र की थी, जो इस समय यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर है, तो दूसरा अनसेव्ड नम्बर था। मित्र का फोन सुबह आठ बजकर सैंतिस मिनट पर आया था। -'ओ-हो! लगता है फोन के साइलेंट-मोड पर होने के कारण मैं उसकी कॉल अटैण्ड नहीं कर पाया। कोई बात नहीं, अभी रिंग-बैक करके पूछ लेता हूँ कि उसने इतने दिनों बाद कैसे याद किया? थोड़ी देर उसी संग पुरानी यादें ताजा की जायें।'

मित्र को फोन मिलाने पर दो-तीन बार पूरी रिंग गयी, लेकिन उधर से कॉल अटण्ड नहीं हुई। ---'लगता है वो अपनी क्लॉस में होगा-? खैर--ये दूसरा अनसेव्ड नम्बर मिलाता हूँ-।' यही सोचते उसने वो दूसरा नम्बर मिलाया। उस नम्बर पर लगातार रिंग जाती रही, लेकिन दूसरी तरफ से किसी ने कॉल अटण्ड नहीं की। हाँ, पर दूसरी तरफ से फोन में आ रही कॉलर-ट्यून बहुत प्यारी थी। -'ये जीवन है, इस जीवन का, यही है---यही है--यही है छाँव-धूप---' मन-मस्तिष्क को झकझोरने वाला यह दिलफरेब गाना, जिसके मोहावेश में उसने उस नम्बर पर दो-तीन बार और कॉल मिलाने की कोशिश की। बहरहाल दूसरी तरफ से कोई रेस्पॉन्स न मिलने पर वो उठकर बरामदे में टहलने लगा। चूंकि भोजन के समय उसे पानी पीने की आदत नहीं हैं, सो अब उसे थोड़ी प्यास महसूस हुई। फ्रिज से बोतल निकालते, उसे एक गिलास में सामान्य पानी के साथ मिलाते, पानी पीने के बाद वह मेन-गेट से बाहर सड़क पर यूंही अनमने से चहलकदमी करते आगे बढ़ा था कि सामने से आते, उसके दफ्तर के एकाउण्टेण्ट विवेक जी दिख गये।

''अरे! विवेक जी कैसे हैं? आप कुछ मुरझाए-मुरझाए से दिख रहे हैं। तबियत तो ठीक है न?'' उसने ही बातचीत की पहल की।

''जी, एकदम ठीक हूँ।'' विवेक जी ने कुछ अनमने से उत्तर दिया।

''सुना है आपको कोई पुरस्कार-उरस्कार मिला है? ऐसी खबर से तो आपको उत्साहित होना चाहिए?''

''हाँ! आपका कहना तो सौ-फीसदी सही है, लेकिन एक स्वाभिमानी मन भी तो है। जो सोचता है कि यह सम्मान कहीं मेरी प्रतिभा के बजाए, पद-प्रतिष्ठा का तो नहीं?''

''अब जब आपको नहीं पता, तो फिर इसके कारणों के पीछे काहे खामखाह मगजमारी कर रहे हैं। पुरस्कार देने वाले जब दे रहे हैं तो रख लीजिए। हाँ! लेकिन पॉर्टी जोरदार देनी पड़ेगी-हें-हें-हें। वैसे आज आप दफ्तर नहीं गये?''

''हाँ, घर में कुछ जरूरी सौदा-सुलुफ खरीदने थे। काफी दिनों से टल रहा था। बच्चे तो बाहर ही रहते हैं। पत्नी को दो-चार पग चलने में ही घुटनों में दर्द होने लगता है। फिर आप तो जानते ही हैं कि

वितीय वर्ष की क्लोजिंग में कितना काम रहता है, सो टाइम ही नहीं मिल पाया, तो सोचा कि क्यों न छुट्टी लेकर ही यह काम निबटाया जाय---?'' कहते, बिना प्रत्युत्तर की आशा के, ये दर्द लिये विवेक जी अपने गंतव्य की ओर बढ़ गये।

'--कमाल है! किसी को फोन मिलाने पर पूरी ग्रिं चली जा रही है, अटैण्ड नहीं हो रहा, तो अचानक आमना-सामना होने पर किसी को दो क्षण रुककर आत्मीय बोलने-बतियाने की भी फुरसत नहीं? जिसे देखिये वही व्यस्त है?-- अरे! ये मेरी जेब में क्या है?--ओ-हो! बिजली का बिल, जो पिछले हफ्ते ही देय था। मैं भी कैसा भुलक्कड़ हूँ। इसके लि, तो अब बिजली घर तक जाना होगा। खैर--थोड़ी दूर पर ही तो है। वहाँ तक पैदल-मार्च कर लेता हूँ। यही ठीक रहेगा।' उसने खुद को मुतमैय्यन करते बिजली-घर का रुख किया।

''बाबू जी! कुछ खाने को--?'' बिजली घर जाते हुए रास्ते में एक वृद्ध भिखारी ने उसे टोका। उसकी हालत देखते, कुछ मदद करने वास्ते जब उसने अपनी जेब में हाथ डाला तो वहाँ उसे सिर्फ अपना ए.टी.एम. कॉर्ड और दो रुपये का सिक्का ही मिला। जबकि वो उस वृद्ध को कुछ रुपये देने की सोच रहा था। बहरहाल, थोड़ा अफसोस जाहिर करते, वो सिक्का ही उस वृद्ध के हवाले करते वो आगे बढ़ गया।

'-अरे! (यहाँ तो काउण्टर के सामने जबरदस्त भीड़ है। चतुर्दिक व्यस्तता, भीड़-भाड़, कहीं भी एक पल को सुकून नहीं।' बिजली का बिल जमा करने जब वो बिजली-घर पहुँचा तो वहाँ बिल जमा करने वालों की भीड़ देखकर वह भी एक काउण्टर के आगे, जहाँ 'क्यू' ज्यादा लम्बी नहीं थी, उसके पीछे जाकर खड़ा हो गया।

अमूमन उसका अनुभव यही रहा है कि जब कभी भी बिजली, टेलीफोन या नगर निगम में वॉटर, सीवर, हॉउस-टैक्स आदि का बिल जमा करने अथवा बैंक, ए.टी.एम., सिनेमाघर आदि में टिकट-खिड़की के सामने उसे 'क्यू' में खड़ा होने का अवसर मिलता है, तो वो इन्तजार में बोरियत महसूस नहीं करता, बल्कि अपने साथ खड़े लोगों के बॉडी-लैंग्वेज से अटकलबाजियाँ लगाने में मश्गूल रहता है कि वहाँ विभिन्न मुद्राओं, भाव-भंगिमाओं में खड़े लोग मन-ही-मन क्या कुछ सोच रहे हैं? यदि कुछ लोग आपस में बतिया रहे हैं, तो उनके बीच मौजूदा बातचीत का मुद्दा क्या हो सकता है? उनकी बातें सुनने-जानने की अजीब फितरत है उसे। इससे अपना नम्बर आने तक उसे समय का पता ही नहीं चलता। वह बिजली का बिल जमा करने आये, अपने आगे खड़े लोगों की बातें सुनने में मशगूल हो गया।

''एतनी देर काहे लग रही है भइया?'' काफी देर तक जब 'क्यू' में लोगों के आगे बढ़ने की पहल नहीं हुई तो उसने अपने आगे वाले सज्जन से पूछा।

''सुनेन हैं कि आज काउण्टर पर कउनो नवा मनई लगावा गए हैं। आप तो जानत होइहें कि रुपिया-पइसा केर मामिला है। गुणा-भाग जोड़-घटाव में कहूँ कुछ गड़बड़ी हुय गयी, तो इन्हैं लेने के देने पड़ि जइहैं?'' आगे वाले सज्जन ने अपनी ही स्टॉइल में घटना-स्थल की विवेचना प्रस्तुत की।

''ई ससुर टरेनिंग-सेण्टर है का?'' आगे खड़े सज्जन के बगल खड़े एक अधेड़ से सज्जन, जो 'क्यू' में आने के बजाय किसी तरह बिना 'क्यू' में लगे ही बिल जमा करने की जुगत में थे, बोल उठे।

''भइया तनिक लामे खड़ा रहौ।'' आगे खड़े सज्जन ने अपने बगल खड़े उन अधेड़ सज्जन को टोका।

''काहे-?'' बगल खड़े उन अधेड़ सज्जन ने उनकी ओर तनिक तल्ख निगाह देखते प्रश्न किया।

''यार तुम! अपने मुँह मां एतनी सुर्ती भरे हौ कि बहुतै बास मारत हौ।'' बोलते वक्त, 'क्यू' के बगल में खड़े उन अधेड़ सज्जन के मुँह से वाकई तम्बाकू की भयंकर बदबू आ रही थी।

''तुमहूँ राजू नहिके-सुर्ती से त फुर्ती बना रहत है। अइस लागत है कि हिंयां लाइन मां खड़े-खड़े

सांझ हुइ जाये। पता नाहीं आपन नम्बर कब आवै?'' कहते वो अधेड़ सज्जन 'क्यू' से अब थोड़ा दूर हट कर खड़े हो गये।

''चलौ पीछा छूटा। ई चाचा, बड़ी देर से जी हलकान किये लाइन मां घुसुरै क उपाय खोजत रहेन। अब दूरेन रहियें।'' कहते आगे वाले सज्जन ने पीछे मुड़ते तनिक मुस्कियाते, अपनी बायीं आँख हल्के दबाते उसकी ओर ऐसे देखा मानो किसी बड़े मोर्चे पर फतह हासिल कर ली हो। वाकई, जहाँ सभी जल्दी में हों, एक-एक सेकेण्ड कीमती हो, ऐसे में इसे बड़ी विजय ही कही जा सकती है। 'क्यू' में खड़े-खड़े उसने भी राहत महसूस की।

''ये सामने से जो जनाब आ रहे हैं, ये भी लाइन के बीच में घुसने का पयास करेंगे इन्हें बीच में घुसने मत दीजियेगा। इतना बक-बक करेंगे कि दिमाग भन्ना जायेगा।''

''लेकिन, ये तो अच्छे-खासे शरीफ से दिख रहे हैं।''

''आज के जमाने में कुछ कहा नहीं जा सकता। मैं इस पक्के दारूबाज को पिछले बाइस-तेइस साल से जानता हूँ। आज इसकी उमर साठ-बासठ साल तो होगी ही। ससुरा अभी भी हट्टा-कट्टा दिखता है---हें-हें-हें।''

''भइया ये तो सूट करने वाली बात हुई। पता नहीं किसको, कब, कौन सी चीज सूट कर जाये---हें-हें-हें।''

''जान पड़त है मशीनियां गड़बड़ा गया है?'' इसी बीच उसने ध्यान दिया कि काउण्टर पर बिल जमा करने वाले क्लर्क के कम्प्यूटर का प्रिण्टर ठीक से काम न करने की वजह से बार-बार पेपर फंस जा रहा था। ऐसे में 'क्यू' में खड़े लोग फिर से धैर्य खोते आपस में बहस-मुब्तिला हो गये।

''अब एक्सपायरी-डेट के बादौ चलाएंगे तो का होगा? एही से ई मशीनियाँ बीच-बीच मां धोखा देइ देत है।''

''सही कहि रहे हो भइया। अउर तनिक उनका मॉस्क तो देखौ---कहाँ लगाये हैं?''

''फइसन है भइया---का करिहौ?---हें-हें-हें।''

''ई लोगन के यहै आदत की वजह से तो ऊ दहिजरा करौनवउ भी डटि के बइठा बाय। बार-बार लहरिया, पड़ा है। भागै क नामैं नाय लेत है, जउन बाय तउन से---हें-हें-हें।''

''जानौ चालू होइ गयी? भइया अब आपौ आगे खिसकैं--आप की बारी है।'' अब प्रिण्टर काम करने लगा था। आगे वाले सज्जन ने अपने आगे वाले को हॉक लगाई। खैर--जैसे-तैसे 'क्यू' में लगभग पौन घण्टे की मशक्कत के बाद बिजली का बिल जमा हो गया था।

बिजली-घर से लौटते-लौटते उसे अब शाम हो गयी थी। घर आकर हाथ-मुँह धोने के बाद अदरक, कालीमिर्च, तुलसीदल युक्त अपनी पसंदीदा चाय बनाकर पीते हुए उसने जब अपने दिन-भर के काम-काज की लिस्ट पर एक बार और नजर डाली तो उसे इस बात का सन्तोष हुआ कि लिस्ट के हिसाब से लगभग आधे कार्यों को निबटा चुका हूँ। अब बाकी के कार्यों को अगले हफ्ते निबटाऊँगा। वैसे, आज का दिन काफी व्यस्त और मशक्कत भरा रहा, जबकि दिन की शुरूआत में तो आज के लिए कोई काम सूझ ही नहीं रहा था। यानी तमाम मसरूफियत भरा दिन अंततः कुछ पेंडिंग कार्यों के निबट जाने के तईं पुरसुकून ही रहा।' वह मन-ही-मन बुदबुदाया।

5/348, विराज खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ - 226010, उत्तर प्रदेश
मो. -9450648701
ramnaginamaurya2011@gmail-com

मुझे तुम नज़र से गिरा तो रहे हो...

एक था अनलासुर वह अग्नि के समान दारुण दाहक था और अपनी इसी दाहकता से देवताओं को यातना दिया करता था। देवता सदैव की भाँति उससे छुटकारे का कोई उपाय न पाकर महादेव की शरण में गए। महादेव ने गजानन को उस अनलासुर को निगल जाने का आदेश दिया। गणेश जी ने पिता की आज्ञानुसार उसे समूचा ही निगल लिया, लेकिन अब उनके पेट में भीषण जलन होने लगी। लम्बोदर अत्यन्त रुग्ण होकर पिता योगीश्वर शंकर के पास पहुँचे। योगियों के अधिपति श्री शंकर ने आयुर्वेद के ज्ञाता ऋषियों का आवाहन किया और उनसे गणपति का दाह दूर करने की प्रार्थना की।

ऋषियों ने विनायक को दूर्वा खाने की सलाह दी। विघ्नहर्ता ने दूब घास खाकर अपने उदर की दाहकता को शांत किया। यह कहानी भले ही सांकेतिक हो लेकिन हमें वनस्पतियों का महत्व बताने के लिए कारगर है।

वैद्यिकी का अच्छा ज्ञान रखने वाले बताते हैं कि दूब घास गात दाह के लिए रामबाण है।

काफी समय पहले मेरे एक रिश्तेदार को हर्पीज हुआ था। बहुत से एलोपैथिक डाक्टरों को दिखाया लेकिन छाले थे कि बढ़ते ही जा रहे थे। तब किसी ने कहा कि आयुर्वेदाचार्य को दिखाओ।

आयुर्वेदिक चिकित्सक ने कहा चावल के आटे को दूब के रस में मिलाकर उसका पेस्ट हर्पीज के छालों पर दिन में कम से कम तीन बार लगायें और तीन दिन बाद हमें मरीज़ का हाल बतायें। कहना न होगा कि तीन दिन बाद उनकी हर्पीज में काफी कुछ आराम था। सबसे जरूरी बात यह कि पहली बार लगाते ही उनके शरीर पर जलन और दर्द में 90 प्रतिशत तक आराम आ चुका था और तीन दिन बाद तो छाले सूख कर झड़ने लगे थे।

पुराने जड़ी बूटियों के जानकार आज भी घमौरियों पर दूब का रस लगाते हैं और इससे घमौरियाँ बहुत जल्दी छू-मंतर हो भी जाती हैं। शरीर के घावों को सुखाने में भी इसका रस कारगर है।

दूब घास में ट्रायटरपिनोइड्स, पामिटिक एसिड, कैरोटीन, फ्रीडलीन जैसे रसायन पाए जाते हैं। जो एंटीवायरल हैं जिससे शरीर की जलन शांत करने में बहुत सहायता मिलती है।

कुत्तों को जब अपच होती है तो वे दूब घास ही चबाते हैं। उसके रस से शायद उनके पेट की गर्मी को आराम मिलता होगा इसीलिए वे इस सहज ज्ञान के आधार पर अपना इलाज खुद ही कर लेते हैं और एक हम इंसान हैं, जो अपने पास के ज्ञान को नकार कर जाने किस ज्ञान की मरीचिका में हाँफते काँपते दौड़े चले जा रहे हैं।

'बैक टु वेदाज' की तर्ज पर कहने का मन करता है

'बैक टु आयुर्वेदाज'

डॉ. संध्या तिवारी, पीलीभीत

हिमालय स्थान बदल रहा है: ज्योतिषीय विश्लेषण

-ज्योतिष आचार्या रेखा कल्पदेव

प्रकृति बेहद खूबसूरत है, इसकी वंदना, सराहना, प्रशंसा ने अनेकों अनेक शास्त्र, ग्रंथ और काव्य रचे गये है। प्रकृति की प्रत्येक विधा मनुष्य के लिए किसी न किसी प्रकार से उपयोगी रही है। मानव ने जब भी स्वार्थ में अंधे होकर प्राकृतिक संसाधनों से खिलवाड़ किया है, तो इसकी प्रतिक्रिया में प्रकृति भयंकर आपदाओं के रूप में सामने आयी है। प्रकृति अपने आंचल में पानी, जल, वायु, अग्नि, मृदा, भूमि पेड़-पौधे सभी समेटे हुए हो। प्रकृति से छेड़छाड़ का फल यह होता है कि व्यक्ति को ये सभी वस्तुओं पर्याप्त रुप से उपलब्ध नहीं हो पाती है। प्र ति जब बिगड़ जाती है तो उसका स्वरूप भयानक और तबाह करने वाला हो जाता है। वह जगत को पानी, जल, आग, भू- स्खलन से मग्न कर देती है। सब कुछ तबाह हो जाता है।

प्राकृतिक आपदा से अभिप्राय: सरल शब्दों में प्रकृति के नाराज होने के फलस्वरुप होने वाली हानि से है। यह ज्वालामुखी विस्फोट, भूकंप, भूस्खलन, चक्रवती तूफान, सा क्लोन समुद्री तूफान, जंगलों में आग आदि से है। प्रकृति क्रोधित होने पर विकराल रूप धारण कर अपने तरीके से लोगों को सजा देती है, इसकी चपेट में असहाय और निर्दोष प्राणी भी आ जाते हैं। विश्व धारा में प्रकृति अपना खेल जब-जब आपदाओं के रूप में खेलती है, तो यह महाविनाश के रूप में सामने आता है। प्राकृतिक आपदाओं में जान और माल की हानि किसी से छुपी नहीं है। समय समय पर ऐसी विनाशकारी घटनाएँ विश्व में कहीं न कहीं होती ही रहती है। वैदिक ज्योतिष के महान ऋषियों ने इस ज्योतिष विद्या के वट वृक्ष को अपने अनुभव, ग्यान और अध्ययन साधना से सींचा। विज्ञान जब घुटने टेक देता है तो दैवीय विद्या कारगर सिद्ध होती है इसी का उदाहरण ज्योतिष विद्या है। प्राकृतिक घटनाएँ क्यों होती है?

इसके ज्योतिषीय कारण क्या हैं? आज इस आलेख में हम इसी विषय पर प्रकाश डालेंगे- आइये इस स्थिति को समझने का प्रयास करते है।

मकर राशि में शनि के गोचर ने करोना नामक वैश्विक महामारी दी। जब भी गोचर में शनि गुरू का दृष्टि या युति संबंध बनता है, विश्व में हाहाकार होना तय होता है। 17 जनवरी 2023 को एक बार फिर से शनि मकर राशि से निकल कर कुंभ राशि में गोचर करने वाले हैं। इससे पूर्व तक शनि की तीसरी दृष्टि का प्रभाव में राशि स्थिति गुरू ग्रह पर रहेगा। शनि की तीसरी दृष्टि अपने अशुभ प्रभाव के लिए विशेष रूप से जानी जाती हैं।

यहाँ बता देना सही होगा की शनि 29 अप्रैल 2022 में ही कुंभ राशि में गोचर कर चुके हैं। परंतु वक्री होकर शनि ने मकर राशि में वापसी की है। 12 जुला 2022 को शनि वक्री अवस्था में मकर राशि में वापसी कर गए। तब से लेकर 17 जनवरी 2023 तक शनि मकर राशि में ही गोचर कर रहे थे, बस पहले वक्री थे अभी मार्गी अवस्था में गोचर कर रहे हैं। मकर राशि में शनि और मीन राशि में गुरू, जहाँ शनि गुरु को देख रहे हैं। अर्थात शनि का प्रभाव गुरु पर बना हुआ हैं। एक नजर गोचर पर डालें तो इस समय केतु की पंचम दृष्टि कुंभ राशि पर बनी हुई है।

वर्तमान में भारत की कुंडली में चंद्र में केतु की दशा प्रभावी है। भारत की कुंडली वृषभ लग्न और

कर्क राशि की कुंडली है। भारत की कुंडली पर वर्तमान ग्रह गोचर लगाने पर हम पाते हैं कि राहु भारत की कुंडली के द्वादश भाव पर गोचर कर रहे हैं। द्वादश भाव मोक्ष भाव होने के कारण, धार्मिक स्थलों का भाव हैं। इसके अतिरिक्त राहु मेष राशि में गोचर कर चतुर्थ भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव को जोड़ कर एक त्रिकोण का निर्माण कर रहे हैं। यह निर्माण तीनों मोक्ष भावों (4,8,12) पर होने के कारण एक नवनिर्माण का संकेत दे रहा हैं।

साल 2023 को अंक ज्योतिष अनुसार देखें तो यह वर्ष केतु के प्रभाव का वर्ष है। केतु ग्रह स्वयं एक बहुत बड़े बदलाव करने वाले ग्रह के रूप में जाना जाता है। केतु के विषय में कहा गया है कि यह स्थान छुड़ाता है। स्वतंत्र भारत की कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थिति है और गोचर में इस समय केतु छठे भाग पर गोचरस्थ है।

भारत की अंतर्दशा भी इस समय चंद्र में केतु की है अर्थात सभी ग्रहों में केतु की भूमिका अहम बनी हुई है। केतु को अंतर्दशा जुलाई 2023 तक रहने वाली है। इस समय काल में केतु गोचर में अपनी पंचम दृष्टि से मकर राशि को प्रभावित करने वाला है। यह समय मकर राशि, और कुंभ राशि के लिए कष्टकारी बना हुआ हैं। केतु को सप्तम दृष्टि में राशि पर और नवम दृष्टि मिथुन राशि पर है।

भारत की कुण्डली में तीसरा भाव विशेष रूप से पीड़ित भाव है। तीसरा भाव उत्तर दिशा को इंगित करता करता है। कर्क राशि भारत की जन्म राशि है और सिंह राशि भारत के हृदय भाव की राशि है। मकर राशि में शनि कर्क राशि को पीड़ा दे रहा था और कुंभ राशि में जाने पर सिंह राशि अर्थात भारत के हृदय को आहत लगने के योग बना रहा हैं। कुंभ राश में शनि का गोचर भारत के उत्तर राज्यों जिसमें हिमाचल और उत्तराखंड मुख्य रूप से हैं उनके लिए घातक ग्रह योग बना रहा है।

जुलाई 2023 की अवधि केतु अंतर्दशा की है, इस काल में भारत का उत्तर भाग हिमालय की परतों में समा सकता है। जोशीमठ में आज हम जो भूमि दरकने की स्थिति देख रहे हैं, वो वास्तव में हिमालय की बड़ी परतों के खिसकने के कारण है।

ऐसे में भूमि खिसकने की समस्या केवल अकेले जोशीमठ की समस्या नहीं हैं, बल्कि यह पूरे उत्तराखंड, और हिमाचल की समस्या है। चार धाम तीर्थ स्थल इसकी चपेट में आ सकते है।

शनि का गोचर भारत के नक्शे में बड़े बदलाव का संकेत दे रहा है। आने वाले 180 दिन भारत के लिए बड़े भयावह साबित हो सकते हैं। बड़ी संख्या में जान माल की हानि और भौगोलिक बदलाव की स्थिति इस समय में देखने में आ सकती हैं।

सनातन धर्म के बड़े बड़े धार्मिक स्थल इसकी चपेट में आ सकते हैं।

17 जनवरी 2023 से लेकर 29 मार्च 2025 तक शनि कुंभ राशि में ही रहेंगे। परंतु गुरू मेष राशि में गोचर करेंगे तब हालात और खराब होंगे। आर्थिक रूप से और भौगोलिक रूप से साल 2023 अनुकूल नहीं कहा जा सकता है।